

मसीही अगुवा

मसीही अगुवा: पाठ्यक्रम

टिप्पणियाँ -

कक्षा #१:

- I. पाठ्यक्रम परिचय।
- II. मसीही अगुवा क्या है?
 - क. मसीही अगुवे की परिभाषा।
 - ख. मसीही अगुवे की कुंजी।
 - ग. अगुवे को लेकर कथन।
 - घ. अगुवे को लेकर वचन।
 - ङ. अगुवे के प्रकार।

कक्षा #२:

- II. मसीही अगुवा क्या है? (जारी।)
 - च. अगुवे के चेहरे।
 - छ. अगुवे पर कार्यपृष्ठ।
- III. मसीही अगुवे का कब और कहाँ।
- IV. परमेश्वर कुछ लोगों को अगुवे के रूप में क्यों चुनते हैं?
 - क. परिचय

कक्षा #३:

- IV: परमेश्वर कुछ लोगों को अगुवे के रूप में क्यों चुनते हैं? (जारी।)
 - ख. अगुवा शुद्ध है।
 - ग. अगुवा नम्र है।
 - घ. अगुवा दास है।
 - ङ. अगुवा परमेश्वर को खोजता और उन्हें जानता है।
 - च. निष्कर्ष और सारांश।
 - छ. एक अच्छे अगुवे की अतिरिक्त विशेषताएं।
 - ज. अपनी अगुवाई की योग्यताओं को बढ़ाने और विकसित करने के तरीके।

कक्षा #४:

- V. हम किस प्रकार से अगुवाई करते हैं?
 - क. सेवा, नम्रता और उदाहरण द्वारा- यूहन्ना १३:१-१७।
 - ख. किस प्रकार श्रेष्ठ बनते हैं।
 - ग. चेलों का श्रेष्ठता को लेकर एक सांसारिक दृष्टिकोण होता है।

कक्षा #५:

- V. हम किस प्रकार से अगुवाई करते हैं? (जारी।)
 - श्रेष्ठता को लेकर सांसारिक दृष्टिकोण;
 - परीक्षा।

मसीही अगुवा

टिप्पणियाँ -

मसीही अगुवा: परीक्षा

सम्भावित २० सूत्रीय प्रश्न

- १) मसीही अगुवे की “कुंजी” पर चर्चा करें (पृष्ठ ४, ५)।
- २) तीन अलग अलग तरह की सेवकाई के बारे में लिखें और उनकार वर्णनल करें (पृष्ठ १०-१२)। (उसने कार्य, कार्य करने के लक्ष्य, मसीही के कार्यक्षेत्र सम्बन्धी वचनों को शामिल करें।)
- ३) कलीसिया के कालों के विचार का इस्तेमाल करते हुए दर्शाएं कि किस तरह से विभिन्न प्रकार की अगुवाओं की कलीसिया को आवश्यकता होती है। अगुवाओं के बहुवचन के विचार की चर्चा के विषय को तथा इस बात को शामिल करना चाहिए कि अगुवे किस प्रकार से कार्य करते हैं (पृष्ठ १२, १७)।
- ४) प्रश्नों के उत्तर दें “किस चीज़ की अनुमति है?... क्या ऐसा करना आपके लिए ठीक है?... क्या ऐसा करना आपके लिए ठीक है?” (पृष्ठ २८, २९)।
- ५) यूहन्ना १३:१-३ का उपयोग करते हुए यीशु के अगुवाई करने के तरीके के पीछे की प्रेरणा का वर्णन करें (पृष्ठ ४३-४५)।
- ६) व्याख्या करें कि किस प्रकार श्रेष्ठ बना जा सकता है (पृष्ठ ५०-५१)।

सम्भावित १० सूत्रीय प्रश्न

- १) मसीही अगुवे की एक स्पष्ट परिभाषा दें (पृष्ठ ३, ४)।
- २) इस कथन की व्याख्या करें “यदि आप स्वयं कहीं नहीं जा रहे हैं तब तक आप किसी की अगुवाई नहीं कर सकते।” (पृष्ठ ६)।
- ३) ऐसा क्यों सत्य है कि परमेश्वर को अगुवे की योग्यताओं या उसके कौशल से बढ़कर उसके स्वभाव की आवश्यकता होती है (पृष्ठ ८)?
- ४) उपलब्धियां हासिल करने वाली कलीसिया को उसके द्वारा बल दी जाने वाली बातों और उसके मुख्य वचन और मुख्य पद के बारे में बताते हुए परिभाषित करें। (पृष्ठ १२)।
- ५) चार तरह के अगुवे और उससे सम्बन्धित सुसमाचार और उसमें कितने प्रकार की अगुवाई हैं (पृष्ठ १७, १८)?
- ६) एक उदाहरण दें कि किस प्रकार से कुछ लोग इस क्षेत्र में गलत तरीके से अधिकार का इस्तेमाल करते हैं (पृष्ठ २४)।
- ७) अगुवे के जीवन में शुद्धता के महत्व को दर्शाने के लिए मती ५:८ का इस्तेमाल करें (पृष्ठ २७, २८)।
- ८) एक अगुवे के जीवन और सेवकाई की एक मूल समस्या का वर्णन करें जो उसमें नम्रता के अभाव के कारण उत्पन्न होती है (पेज ३२, ३३)।
- ९) चर्चा करें कि “दर्शन” किस प्रकार से एक अच्छे अगुवे की पहिचान है (पृष्ठ ३८)।
- १०) अगुवे पैदा होते हैं या बनाए जाते हैं (पृष्ठ ३)?
- ११) महानता को किस प्रकार से नापा जाता है? यूहन्ना १३ से मिला कर देखें (पृष्ठ ४७, ४८)।
- १२) अच्छे अगुवे के १२ भेदों में से एक पर संक्षेप में चर्चा करें (पृष्ठ ५२)।

मसीही अगुवा

I. पाठ्यक्रम का परिचय

टिप्पणियाँ -

लेखक का उदाहरण:

मेरे सामने चल रही एक कार पर एक स्टीकर लगा था जिसमें लिखा था कि: “तुम मेरा अनुसरण क्यों कर रहे हो? मैं तो खुद खोया हुआ हूँ।” गति सर्वदा उद्देश्य को नहीं दर्शाता। इसलिए हमें हमेशा भीड़ के पीछे नहीं हो लेना चाहिए। अधिकतर भीड़ को यह पता नहीं होता है कि वह कहां जा रहा है!

इसीलिए इस पाठ्यक्रम को केवल “अगुवे” नहीं कहा गया है। संसार में बहुत से अगुवे हैं (और संसार में बहुत से लोग केवल भीड़) जिन्हें यह तक नहीं पता है कि वे कहां जा रहे हैं (मती १५:१४)। हमें मसीही अगुवे की आवश्यकता है। हमारा सबसे पहला प्रश्न यह है: कि मसीही अगुवा या अगुवाई क्या है?

अपना उदाहरण लिखें:

II. मसीही अगुवा क्या है?

क. मसीही अगुवे की परिभाषा।

१. अगुवा।

क. मुख्य विचार दूसरों पर प्रभाव डालना है।

ख. अगुवाई करने का अर्थ मार्गदर्शन करना या दिशा दिखाना है।

२. मसीही।

क. मुख्य विचार एक व्यक्ति है। मसीह। यीशु मसीह।

ख. एक मसीही जन मसीह-केन्द्रित या मसीह के द्वारा चालित व्यक्ति होता है।

मसीही अगुवा

टिप्पणियाँ -

३. मसीही अगुवा।

- क. मसीह सकेन्द्रित मार्गदर्शन।
- ख. मसीह के प्रति मार्गदर्शन।
- ग. मसीह की ओर मार्ग दिखाना।

चर्चा विषय

मसीही अगुवे और सांसारिक अगुवाई के बीच अन्तर पर चर्चा करें।

ख. मसीही अगुवे की विशेषताएं।

- १. उसकी मुख्य विशेषता यह है कि वह एक व्यक्ति को मसीह में उसकी वर्तमान स्थिति से लेकर उसे मसीह के एक कदम और निकट ले आना है।
 - क. किसी व्यक्ति को यीशु के निकट लाने का अर्थ उस व्यक्ति को परमेश्वर के राज्य के निकट ले आना है। लेकिन बहुत से ऐसे अगुवे हैं जो बिल्कुल इसके विपरीत कार्य करते हैं। (मती १५:१४ और मती २३:१३ को देखें)।
 - ख. इस विशेषता में भी दो बातों का अनुमान है:
 - १) एक व्यक्ति को मसीह में उसकी वर्तमान स्थिति से ले जाना"- इससे ऐसा प्रतीत होता है कि अगुवा लोगों को जानता है। वह किसी व्यक्ति से बातें करके जान सकते हैं कि वे अभी कहां पर खड़े हैं। उसमें बुद्धि और परखने की शक्ति है।

मसीही अगुवा

२) “एक कदम निकट” -यह दर्शाता है कि अगुवा कोई कट्टरवादी नहीं है।

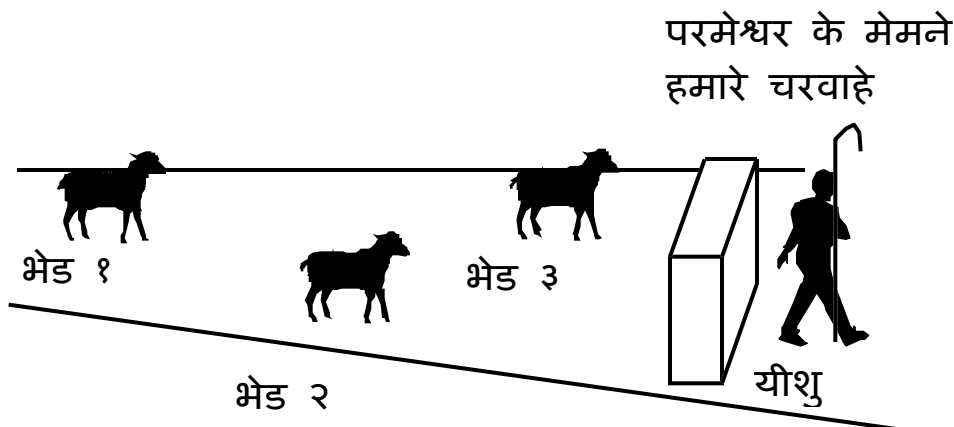
टिप्पणियाँ -

क) वह अपने लोगों से उनकी सीमा से बाहर अपेक्षा नहीं करता है। वह धीरजवन्त है। वह एक-एक कदम करके आगे बढ़ता है। वह फल के आने तक की प्रतीक्षा करने के लिए तैयार है। वह एक नये मसीही को तुरन्त अगुवा बनाने का प्रयास नहीं करने लगता। वह किसी नये व्यक्ति के कांधे पर तुरन्त कोई जिम्मेदारी डालने का प्रयास नहीं करता।

ख) वह लोगों को विकसित होने देता है। वह अपनी सेवाकाई को लेकर इतना सुरक्षित होता है कि वह दूसरों को भी अगुवा बनते हुए देखना चाहता है। वह लोगों पर अपना नियन्त्रण बनाए रखने के लिए उन्हें एक ही स्थान पर रोकना नहीं चाहता है। वह लोगों को मसीह की नज़दीकी में बढ़ते देखने का इच्छुक होता है।

चर्चा विषय

मसीही अगुवे की विशेषता को समझाने के लिए निम्नलिखित आरेख का इस्तेमाल करें।



२. मसीही अगुवे को अपनी भेड़ की यीशु की निकटता में बढ़ाने में मदद करनी चाहिए।

क. भेड़ #१ के मामले में: एक अच्छा मसीही अगुवा जानता है कि उसकी भेड़ कहां है और वह उसे मसीह के एक कदम निकट लेकर आता है।

ख. भेड़ #२ के मामले में: एक बुरा मसीही अगुवा बहुत कठोरता और बहुत जल्दी अपनी भेड़ को मसीह के नज़दीक लाने का प्रयास करता है।

ग. भेड़ #३ के मामले में: एक बुरा मसीही अगुवा असुरक्षित होता है। उसे इस बात से डर लगता है कि उसकी भेड़ बहुत अधिक बड़ रही है। वे सम्भवतः उसे और अधिक पास नहीं रखना चाहता। वह भेड़ की बढ़ने से रोकने का प्रयास करता है।

मसीही अगुवा

टिप्पणियाँ -

अपना उदाहरण लिखें:

चर्चा विषय

अगुवे होने के नाते, हमें उन लोगों की परिपक्वता के भिन्न स्तर को पहिचानना बहुत जरूरी है, जिनकी हम अगुवाई कर रहे हैं। अपने लोगों की परिपक्वता के स्तर को समझने के तरीकों पर चर्चा करें और चर्चा करें कि आप भिन्न परिपक्वता वाले स्तर के लोगों के साथ किस प्रकार व्यवहार करेंगे।

ग. अगुवे से जुड़े कथन।

१. आप अगर स्वयं कहीं नहीं जा रहे हैं तो आप किसी की अगुवाई नहीं कर सकते हैं
- क. एक अगुवा दिशा दिखाता है। इसलिए एक अगुवे को पता होना चाहिए कि किस मार्ग से जाना है। उसे यह पता होना चाहिए कि वह कहां जा रहा है ताकि वह दूसरों की भी अगुवाई कर सके।
- ख. एक अगुवे को दर्शन युक्त व्यक्ति होना चाहिए। उसमें आगे देखने की योग्यता होनी चाहिए।
- ग. एक अगुवे को समर्पित व्यक्ति होना चाहिए। उसे अपने लक्ष्य के प्रति प्रतिबद्ध होना चाहिए।
- घ. एक अगुवे में ऊर्जा होनी चाहिए। वह आगे बढ़ने वाला होना चाहिए। वह आलसी नहीं है। वह उन कार्यों को करने हेतु इच्छुक होना चाहिए जिसके लिए दूसरे लोग इच्छुक नहीं होते।

मसीही अगुवा

२. एक मसीही अगुवे में सम्पूर्ण दर्शन को देख पाने की अनोखी योग्यता होती है (दूरदर्शी बनें), लेकिन दैनिक जीवन की बुनियादी व व्यावहारिक बातों से भी जुड़े रहें।
- क. वह आत्मिक व व्यावहारिक दोनों होता है।
- ख. वह परमेश्वर और मनुष्यों दोनों के साथ रहता है।
- ग. वह इनता “पवित्र” नहीं होता है कि लोगों के संबंध ही न रख सके।
- घ. वह अपनी स्वीकृति को लेकर इतना संकेन्द्रित नहीं होता है कि वह भक्ति से जुड़ी चीजों को ही भूल जाए।
- ङ. वह संसार में होता तो है, लेकिन वह संसार का नहीं होता (यूहन्ना १७:१४-१६)।
- च. वह परमेश्वर का एक पवित्र जन होता/होती है। उसके साथ ही साथ वह एक वास्तविक व्यक्ति भी होता है। वह अपने लोगों के साथ खुला (भेद) होता है। वह लोगों के तुल्य बनता है और लोग उससे अपने आपको जोड़ सकते हैं।
३. यदि आप अपने लोगों से एक कदम आगे चलते हैं तो आप एक अगुवे हैं। यदि आप अपने लोगों से बहुत आगे या उनकी पहुंच से परे चलते हैं तो आप उनसे अलग हो जाते हैं और एक शहीद के जैसे बन जाते हैं।
- क. जी हां, अगुवे को हमेशा आगे होना चाहिए। फिर भी वह लोगों के इतना निकट होना चाहिए कि वह अपने लोगों से दूर न हो।
- ख. यह दूरी शारीरिक और वैचारिक दोनों हो सकती है।
- ग. अगुवे को अपने लोगों और स्वयं अपनी सुरक्षा के लिए अपने लोगों के निकट बने रहना चाहिए।

टिप्पणियाँ -

अपना उदाहरण लिखें:

मसीही अगुवा

टिप्पणियाँ -

चर्चा विषय

अगुवे के सन्दर्भ में मसीही अगुवे से सम्बन्धित दिये गये पिछले विचारों पर चर्चा करें:

- १) लक्ष्य की ओर बढ़ने का एक उदाहरण बनें।
- २) दूरदर्शी और व्यावहारिक दोनों बनना।
- ३) अपने लोगों के घनिष्ठ बनना।

घ. अगुवे को लेकर वचन।

चर्चा विषय

अगुवों में कौन सी योग्यताएं (प्राकृतिक प्रतिभाएं) होनी चाहिए?

अगुवों में किस प्रकार के स्वभाव (आत्मिक योग्यताएं) होनी चाहिए?

(देखें निर्ग. १८:२१, प्रेरितों. ६:३-५, १ तीमु. ३:१-७, तीतु. १:५-९, १ पत. ५:१-३)।

१. बहुत से लोग सोचते हैं कि एक अगुवा होने के लिए आप में बहुत सी प्राकृतिक प्रतिभाएं होनी चाहिए (यह सत्य है कि अगुवाई करना एक वरदान है - रोमियों १२:८)।

क. लेकिन, अगुवों के लिए बाइबल आधारित अधिकतर मांगें वह हृदय से जुड़ी हुई मांगें हैं।

ख. वे व्यवहार हैं। निश्चय ही, मसीही अगुवाई योग्यता से बढ़कर एक व्यवहार है।

२. क्यों? क्योंकि मसीही अगुवाई अपने चुने हुए लोगों के माध्यम से यीशु की अगुवाई है। यीशु को आपके प्राकृतिक प्रतिभाओं की आवश्यकता नहीं होती (हालांकि अगर वे प्रभु यीशु की प्रभुता की अधीनता को स्वीकार करते हैं तो वह उन्हें जरूर इस्तेमाल करेंगे)। उन्हें आपके हृदय की जरूरत है क्योंकि वह वहीं प्रवेश करेंगे।

३. अगुवों को परम सुख की आवश्यकता है (ढलने की प्रवृत्ति)। तब यीशु उनके द्वारा अगुवाई कर सकते हैं। यह मसीही अगुवाई है।

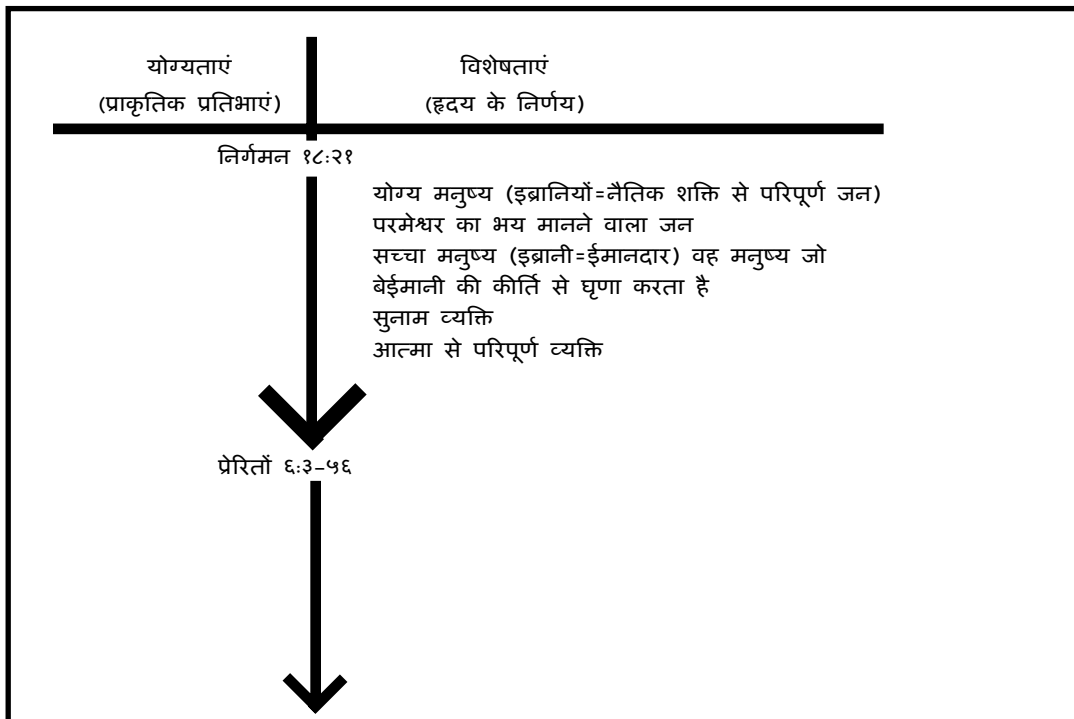
मसीही अगुवा

टिप्पणियाँ -

चर्चा विषय

बाइबल से पांच अनुच्छेदों को पढ़कर निम्नलिखित आरेख पूरा करें - निर्ग. १८:२१, प्रेरितों. ६:३-५, १ तीमु. १:५-९, और १ पतरस ५:१-३, और प्रत्येक मांग पर ध्यान दें। क्या यहां पर मांग एक प्राकृतिक प्रतिभा की है जो केवल कुछ ही लोगों में पायी जाती है?

या यह मांग एक स्वभाव की है जो हर कोई धारण करने का चुनाव कर सकता है?



मसीही अगुवा

टिप्पणियाँ -

ड. अनेकों प्रकार के अगुवे।

१. प्रत्येक अगुवा एक ही समान अगुवाई नहीं करता है। प्रत्येक अगुवे की अपनी विशेष शैली होती है और वह अलग क्षेत्रों में बल देता है।
२. प्रत्येक अगुवे में भिन्न वरदान होते हैं और उनका व्यक्तित्व भी अलग होता है।
३. सामान्य तौर पर तीन तरह की अगुवाई होती हैं।
 - क. राजाओं के समान अगुवाई।
 - ख. भविष्य सूचक अगुवाई।
 - ग. याजकीय अगुवाई।
 - घ. ये तीनों प्रकार की अगुवाई मसीह के तीनों कार्यालयों या उनकी विशेषताओं पर आधारित हैं: राजा, भविष्यद्वक्ता और याजक।

निम्नलिखित सारणी का अध्ययन करें:

अगुवाई की किस्म	कार्य	कार्य का लक्ष्य	मसीह का कार्यालय	जैसा मती २:११ में मिलता है	जैसा मती २१ में मिलता है
राजा	नियुक्त करता है।	कलीसिया का अधिकार	यूहन्ना १२:१३	सोना	पद ९
भविष्यद्वक्ता	मार्गदर्शन करता है	कलीसिया की गतिविधियां	प्रेरितों ३:२२	लोहबान	पद ११
याजक	देता है	कलीसिया का क्षमा दान (अनुग्रह)	इब्रानियों: ५:६	मुर	पद १२

(ध्यान दें: सोना राजा के लिए उचित उपहार था। लोहबान का इस्तेमाल गाड़े जाने की प्रक्रिया में किया जाता था... यीशु एक भविष्यद्वक्ता के रूप स्वयं अपनी मृत्यु के बारे में भविष्यद्वक्ता करते हैं। मुर का इस्तेमाल याजक के द्वारा मन्दिर की सेवा के लिए किया जाता है।)

४. मसीह में ये तीनों विशेषताएं पायी जाती हैं। वह एक सिद्ध अगुवे हैं। किसी भी व्यक्ति की अगुवाई में इन तीनों में से एक विशेषता पायी जाती है।
 - क. बहुत से अगुवे सामर्थ्य और प्रभाव पर संकेन्द्रित होते हैं (राजकीय विशेषता)।
 - ख. कुछ अगुवे दर्शन और मार्गदर्शन पर संकेन्द्रित होते हैं (भविष्यसूचक विशेषता)।

मसीही अगुवा

ग. अन्य अगुवे लोगों के व्यावहारिक जीवन और उनके लिए उपलब्ध परमेश्वर के अनुग्रह पर सकेन्द्रित होते हैं (याजकीय विशेषता)।

१) जब हम “याजक” कहते हैं तो हम पुराने नियम के याजक को ध्यान में रखते हुए इस पद को सम्बोधित करते हैं जो लोगों की ओर से सेवा निभाते थे- लोगों के जीवन के सन्दर्भ में बात करें तो उनकी सेवकाई बहुत व्यावहारिक थी।

२) आजकल, यह सेवकाई लोगों के लिए और उनके साथ खड़े होने वाली सेवकाई के रूप में प्रतिनिधित्व करती है- हम इस प्रकार की सेवकाई को “पासबान का हृदय” रखने वाली सेवकाई कह सकते हैं।

५. यहां पर हमें दो बातों पर जोर देने की ज़रूरत है।

क. हमें यह बात समझने की आवश्यकता है कि कलीसिया में हमें तीनों ही प्रकार के अगुवों की ज़रूरत होती है।

१) कलीसिया में विभिन्न प्रकार की सेवकाईयां होगी जिनके लिए विभिन्न प्रकार की अगुवे की आवश्यकता पड़ेगी।

२) कलीसिया भी बहुत से बदलावों से होकर गुजरेगी। कलीसिया का सम्पूर्ण सकेन्द्र बदल जाएगा (हम साम्यानुमान का इस्तेमाल करेंगे और इन्हें “कलीसिया के दौर कहेंगे”)। जैसा कि बताया गया है कलीसिया के प्रत्येक दौर के लिए भिन्न प्रकार के अगुवाई की ज़रूरत होती है।

ख. हमें यह समझना चाहिए कि कोई भी व्यक्ति मसीह नहीं है। कोई भी एक व्यक्ति राजा, भविष्यद्वक्ता और याजक नहीं हो सकता।

ग. जब हम इन दो बातों को जोड़कर देखते हैं, तब हमें कलीसिया में बहुमुखी अर्थात् एक से अधिक अगुवों की आवश्यकता समझ में आती है, जिसे नये नियम में स्पष्ट तौर पर समझाया गया है। (बहुमुखी अगुवाई के बारे अधिक अध्ययन करने के लिए, MOTMOT (मोटमोट) के पाठ्यक्रम कलीसिया के अनुशासन को देखें)।

टिप्पणियाँ -

चर्चा विषय

तीनों प्रकार की अगुवाई महत्वपूर्ण है क्योंकि तीनों अगुवाई की आवश्यकता है। स्वस्थ कलीसिया के अगुवे की विशेषताओं पर ध्यान दें व उन पर चर्चा करें: अलग अलग तरह के अगुवे एक साथ मिलकर कार्य करना सीखते हैं, क्योंकि वे देख पाते हैं कि उन्हें एक दूसरे की आवश्यकता है।

मसीही अगुवा

टिप्पणियाँ -

६. एक अगुवों के दल के रूप में तीनों अगुवाई की शैलियों को एक साथ मिलकर उत्तम तरीके से कार्य करना चाहिए।

क. निम्नलिखित आरेख का अध्ययन व उस पर चर्चा करें:

कलीसिया के प्रकार या दौर	ताकत	भेदता	अगुवाई की शैली	बल दिया जाने वाला लक्ष्य	सामान्यानुमान
संबद्ध: अधिक बल लोगों; सहभागिता पर दिया जाता है मुख्य शब्द: सम्बन्ध मुख्य वचन: यूहन्ना १३:३५	शिष्यता/समाज	इतनी आत्म केन्द्रित, निजी; और एक दूसरे के साथ इतनी आरामदायक बन सकती है और खोई हुई आत्माओं को भूल सकती है।	याजकीय: लोगों से जुड़ी हुई; समूह में चर्चा करना	परामर्श देना; दोरा करना; अन्य व्यक्तिगत कार्य	सामाजिक समुदाय/ सामाजिक अध्यक्ष या परिवार/पिता
उपलब्धि: बल लक्ष्यों; निर्धारित कार्यों पर दिया जाता है। मुख्य शब्द: दर्शन मुख्य वचन: नीति २९:१८	भले कार्य; कार्य कुशल; अनेकों उपलब्धियां	लोगों की जरूरतों के प्रति हो सकती है; अति व्यस्त हो सकती है	भविष्यसूचक: लक्ष्यों द्वारा चालित; लिये जाने वाले निर्णयों को परिभाषित करती है।	जाने वाले मार्ग की ओर संकेत करती है; लक्ष्यों और योजनाओं को निर्धारित करती है; दिशा प्रदान करती है	सफल व्यापार/ व्यापारी या इमारत/ बनाने वाले
शक्ति: बल अधिकार और पदानुक्रम पर होता है मुख्य शब्द: क्रम/ संस्था मुख्य पद: १ कुरिन्थियों १४:४०	अत्यधिक स्थिर; पूरी तरह परिभाषित तथा नियन्त्रित माहौल	शक्ति का शोषण; नये विचारों के लिए कोई खुलापन नहीं; कठोर हो सकता है	राजकीय: शक्ति द्वारा चालित; दूसरों के निर्णयों को प्रभावित करने में सक्षम	प्रशासन तथा प्रबन्धकर्ता; आज्ञा की श्रृंखला का निर्माण करना; अधिकारियों को नियुक्त करना	कारखाना/फोरमैन या सेना/सामान्य

ख. हम यहां पर बल दिये जाने तथा संकेन्द्रित होने पर बात कर रहे हैं।

- हम यह नहीं कह रहे हैं कि भविष्यद्वक्ता के अभिषेक में कार्य करने वाला अगुवा लोगों के लिए चिन्ता करने वाला नहीं होता। हम यह कह रहे हैं कि उसकी स्वाभाविक सोच केवल लक्ष्य पूरा करने की होती है।
- हम यह नहीं कह रहे हैं कि एक याजकीय अगुवा ही केवल लोगों के मिलता है, उन्हें परामर्श देता तथा पासबानी की गतिविधियां करता है। हम केवल इतना कहते हैं कि उसका ध्यान केवल इन्हीं बातों पर लगा रहता है।
- वह इन कामों को करना पसन्द करता है और वह इन्हीं कामों को करता है (यह अपने वरदानों को परिभाषित करने का उत्तम तरीका है- आप क्या करना पसन्द करते हैं? आप किन कामों को अच्छे तरीके से कर पाते हैं?)

मसीही अगुवा

ग. उपरोक्त सारणी में समानता की श्रेणी में प्रत्येक कलीसिया के लिए दो प्रकार समानताएं दी गयी हैं।

१) पहली समानता एक प्रकार से सांसारिक समानता है। यह समानता इस तरह की कलीसिया को दर्शाती है जो आत्मा के चलाए नहीं चलता।

२) दूसरे प्रकार की समानता अधिकतर बाइबल आधारित है। यह समानता इस तरह की कलीसिया को दर्शाती है जो आत्मा के चलाए चलता है।

क) इफिसियों २:१९ में कलीसिया को एक घर या परिवार कहा जाता है।

ख) १कुरिन्थियों ३:९ में इसे इमारत कहा गया है।

ग) २तीमोथियुस २:३,४ में यह एक योद्धाओं की सेना है।

घ. बाइबल इन सभी समानताओं का इस्तेमाल करती है।

१) रिश्तों पर दिया गया बल, दर्शन पर दिया गया बल, क्रम और संस्थाओं पर दिया गया बल आपस में बहुत अलग हैं।

२) वे सभी बहुत आवश्यक हैं। कलीसिया के सभी पहलू और उसकी अगुवाई प्रत्येक कलीसियाओं में किसी श्रेणी तक जरूर विद्यमान होनी चाहिए।

३) फिर भी, प्रत्येक कलीसिया का जीवन के किसी विशेष समयान्तराल में प्रभाव अवश्य पड़ेगा।

४) हम इसे कलीसिया के दौर कह सकते हैं।

५) हम एक कलीसिया के बारे में कह सकते हैं कि उस एक विशेष दौर चल रहा है (जो कि उस समानता या सादृश्यता से मेल खाता है जिसका हम इस्तेमाल कर रहे हैं)।

चर्चा विषय

बहुत से कलीसिया के अगुवे इफिसियों ४:११,१२ के नमूने के आधार पर कलीसिया में बहुमुखी अगुवाई का निर्माण करते हैं (अर्थात एक अगुवाई के दल के साथ जिसमें, प्रेरित, भविष्यद्वक्ता, पासबान, प्रचारक और शिक्षक शामिल होते हैं)। इन नमूनों के बीच अन्तर और समानताओं पर चर्चा करें। सबसे महत्वपूर्ण कुंजी यह है कि ये दोनों ही नमूनों को एक दल या अगुवाई के बहुमुखी होने की आवश्यकता है।

टिप्पणियाँ -

मसीही अगुवा

टिप्पणियाँ -

ड. कलीसिया का मौसम या दौर बदलता है, लेकिन एक अगुवे के वरदान कभी नहीं बदलते हैं।

१) यदि अगुवा एक ही हो तब क्या होता है?

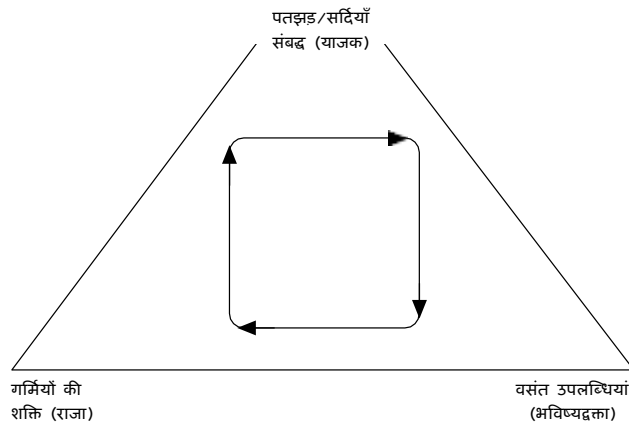
क) कलीसिया को कष्ट उठाना पड़ेगा।

ख) उसे अलग अलग कालों के लिए भिन्न अगुवों की ज़रूरत पड़ेगी।

२) हम कलीसिया में बहुमुखी अगुवाई के महत्व को देखते हैं। यदि कलीसिया विभिन्न प्रकार के वरदान विद्यमान हैं तब कलीसिया हर प्रकार के बदलाव के लिए तैयार रहेगी।

चर्चा विषय

कलीसिया में बहुमुखी अगुवाई और कालों से सम्बन्धित पिछले विचारों पर चर्चा और अनुपालन को प्रोत्साहित करने के लिए निम्नलिखित चित्र का इस्तेमाल करें।



७. कलीसिया के कालों व अगुवों के वरदानों (कार्यालयों) के बारे में अवलोकन।

क. परमेश्वर की मौसमों को रचने वाले हैं। वे एक प्राकृतिक चक्र में कार्य करते हैं।

१) सर्दियों के बाद बसन्त ऋतु आती है।

२) वसन्त ऋतु के बाद ग्रीष्म काल आता है।

३) ग्रीष्म काल के बाद पतझड़ आता है।

मसीही अगुवा

टिप्पणियाँ -

- ४) पतझड़ के बाद सर्दियाँ आती हैं, और यह चक्र पुनः प्रारम्भ हो जाता है।
- ५) यदि कभी बसन्त ऋतु आए ही न तब क्या होगा? नये जीवन का प्रारम्भ कभी होगा ही नहीं।
- ६) सर्दियों को होना अति आवश्यक है। यह बहुत महत्वपूर्ण है कि हर एक चीज़ मरती है। भूमि को विश्राम मिलता है।

ख. कलीसिया के मौसम के साथ भी ये सारी बातें ठीक हैं।

- १) कलीसिया को भी विश्राम करने की ज़रूरत है (सर्दी का मौसम)।

क) पुराने दर्शन और कामों को मरने का अवसर देने की ज़रूरत है।

ख) भीतरी चंगाई के लिए समय की ज़रूरत है।

ग) साथ में खेलने के लिए समय की ज़रूरत है।

घ) याजकीय सेवकाई पर ध्यान देने की ज़रूरत है।

- २) लेकिन, हमेशा नये जीवन का समय आता है।

क) बसन्त ऋतु के आने का समय होता है।

ख) चीज़ें फिर से बढ़ने लगती हैं।

ग) लोगों को जाग उठने और कठिन परिश्रम करने की ज़रूरत पड़ती है।

घ) किस प्रकार के अगुवे उन्हें हिलाते हैं? किसी प्रकार की अगुवाई उन्हें नये लक्ष्यों की ओर बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करेंगे? क्या यह याजकीय अगुवाई होगी? नहीं।

ङ) यह समय भविष्यसूचक सेवकाई पर ध्यान लगाने की है।

च) जिस प्रकार से सर्दियों का मौसम बसन्त ऋतु की ओर आगे बढ़ता है, कलीसिया को भी अपने संबद्ध मौसम से उपलब्धियों के मौसम में प्रवेश करना चाहिए।

मसीही अगुवा

टिप्पणियाँ -

- ३) लेकिन अगर बसन्त ऋतु का अन्त न हो तब क्या होता है?
 - क) तब भूमि जंगल बन जाएगी।
 - ख) किसी समय पर बसन्त ऋतु को गर्मियों के लिए जगह छोड़नी पड़ती है।
 - ग) बढ़ाती को एक क्रम में लाना पड़ता है। नये जीवन को व्यवस्थित करना जरूरी है। यह कार्य गर्मियों की स्थिरता कर देती है।
 - घ) भविष्यसूचक सेवकाई को राजकीय सेवकाई को समय देना चाहिए।
 - ङ) मौसम उपलब्धियों से शक्ति की ओर बढ़ता है।
 - च) पूरे हो चुके लक्ष्य तथा नयी सेवकाईयों को व्यवस्थित किया जाता है। नयी जिम्मेदारियों को पूरा करने के लिए अधिकार दिये जाते हैं।
- ४) यदि गर्मियों को मौसम खत्म नहीं होता तब क्या होता है?
 - क) हर एक चीज सूखी और अवैयक्तिगत हो जाती है।
 - ख) यह समय पुरानी संरचना के मरने तथा चीजों को व्यक्तिगत बनाने का प्रारम्भ हो जाता है। मौसम बदल रहा है।
 - ग) शक्ति का मौसम अब संबद्ध मौसम बन जाता है।
 - घ) राजकीय सेवकाई को अब याजकीय सेवकाई के लिए रास्ता देना पड़ता है। शीत ऋतु आ चुकी है।
- ५) इन सारी बातों से प्रतीत होता है कि वहां पर विभिन्न प्रकार की सेवकाईयां सक्रिय हैं।
 - क) हर एक मौसम सभी प्रकार के अगुवाई की आवश्यकता पड़ती है, क्योंकि हर मौसम में सभी प्रकार की सेवकाईयां हो रही हैं।
 - ख) लेकिन, जिस प्रकार की अगुवाई पर ध्यान केन्द्रित किया जाएगा वह अगुवाई कलीसिया के वर्तमान मौसम या काल के अनुकूल होगी।
 - ग) यह महत्व मौसम बदलने के कारण बदलता है। इसका अर्थ है कि कलीसिया की ज़रूरतें बदलती हैं।

मसीही अगुवा

६) स्वस्थ और सन्तुलित अगुवों को एक दूसरे की आवश्यकता होती है।

क) यह बहुत आसानी से देखा जा सकता है कि याजक को ज़रूरत होती है कि जिन लोगों को उन्होंने सुला दिया है उन्हें भविष्यद्वक्ता आकर जगा दें।

ख) भविष्यद्वक्ताओं को राजाओं की आवश्यकता होती है ताकि वे उन चीज़ों को क्रम में ला सकें जिन्हें उन्होंने हिला दिया है।

ग) राजाओं को याजकों की आवश्यकता होती है, ताकि वे उन चीज़ों को व्यक्तिगत बना सकें जिन्हें वे क्रम में रखा है।

घ) भिन्न प्रकार के अगुवों को एक दूसरे की आवश्यकता होती है। जिस कलीसिया के अगुवे इन चीज़ों को समझते व उनका अभ्यास करते हैं वह एक स्वस्थ कलीसिया है।

टिप्पणियाँ -

चर्चा विषय

कलीसिया में अनेक प्रकार के अगुवों की ज़रूरत के बारे में टिप्पणियों और प्रश्नों को लेकर चर्चा करें।

च. अगुवे के चेहरे।

१. एज़ा १:५,१० और प्रकाशितवाक्य ४:७ को पढ़ें।

क. चार चेहरे क्या प्रदर्शित करते हैं?

ख. हो सकता है कि हम इस प्रश्न का उत्तर दूसरे प्रश्न का उत्तर देकर दे सकते हैं। चार सुसमाचार इन चार चेहरों से किस प्रकार से जुड़े हैं?

ग. चारों सुसमाचारों में से प्रत्येक एक अलग प्रकार के अगुवे को प्रदर्शित करता है। यीशु एक राजा हैं। वह एक भविष्यद्वक्ता हैं। वह एक याजक हैं। वह एक मनुष्य के रूप में इन सभी प्रारूपों में होकर कार्य करते हैं।

१) हमारे पास सुसमाचार हैं: मती (राजा); मरकुस (याजक); यूहन्ना (भविष्यद्वक्ता); लूका (मनुष्य)।

२) हमारे पास चार चेहरे हैं: मती (सिंह); मरकुस (बैल); यूहन्ना (उकाब); लूका (मनुष्य)।

मसीही अगुवा

टिप्पणियाँ -

२. अगुवे के चार चेहरों को देखने के लिए निम्नलिखित सारणी का अध्ययन करें (यह एक रूपक व्याख्या है, इसका अर्थ है कि तस्वीर को सीधे बाइबल खण्ड से नहीं लिया गया है)।

चेहरे	सुसमाचार अगुवा	स्वभाव/सुसमाचार का बल	यीशु के सर्वाधिक इस्तेमाल किये गये सम्बोधन।
सिंह	मती: राजा	यह सुसमाचार यहूदियों के लिए लिखा गया था। इसमें यीशु पर एक साहसी राजा और विजयी मसीह के रूप में बल दिया गया है।	दाऊद की सन्तान: यह उपाधि यीशु की राजकीय सेवकाई पर संकेन्द्रित है। उसे यहूदा के सिंह के रूप में देखा गया है।
बैल	मरकुस: याजक	यह सबसे छोटा सुसमाचार है। इसमें यीशु के कामों पर कोई अतिरिक्त टिप्पणी किये बिना यीशु के कामों की सूची दी गयी है। क्यों? दास यीशु पर संकेन्द्रित है। उसका जीवन लोगों के लिए एक सेवा है।	परमेश्वर का पुत्र: पुत्र ही सेवक है (फिलिप्पियों २:२२)। वह लोगों की सेवा करता है।
मनुष्य	लूका: पात्र	यह सार्वभौमिक सुसमाचार है। यह सम्पूर्ण मानवजाति के लिए लिखा गया था। यह मनुष्यों की जरूरत के लिए यीशु के तरस पर संकेन्द्रित है। इसमें हम यीशु को एक मनुष्य के रूप में देखते हैं।	मनुष्य का पुत्र: यह उपाधि मसीह की मानवीयता पर संकेन्द्रित है। हम एक मनुष्य के रूप में उसकी ईश्वरीयता को देखते हैं। यीशु एक सिद्ध पात्र बन गये।
उकाब	यूहन्ना: भविष्यद्वक्ता	यह सुसमाचार सरल मगर अति महत्वपूर्ण है। इसमें यीशु को एक दिव्य-मनुष्य के रूप में दिखाया गया है।	परमेश्वर का वचन: यह उपाधि मसीह के भेद पर संकेन्द्रित है। यह उसके भविष्यसूचक स्वभाव बल देती है।

क. चार विभिन्न प्रकार के सुसमाचार हैं, जिसमें तीन भिन्न के अगुवों को और एक प्रकार के पात्र को प्रगट किया गया है जिसमें सभी प्रकार की अगुवाई प्रदर्शित की जाती है। यहजेकेल १ व प्रकाशितवाक्य ४ में दर्शाए गये चेहरे (रूपक व्याख्या) वास्तविकता को प्रगट करते हैं।

- १) सिंह राजकीय सेवकाई को प्रगट करता है।
- २) उकाब, भविष्यसूचक सेवकाई को प्रगट करता है।
- ३) बैल (जो भोला परन्तु बलवन्त होता है-वह एक विश्वासयोग्य, नियमित, दास है-वह धीमा और धीरजवन्त है) और याजकीय सेवकाई को प्रदर्शित करता है।
- ४) मनुष्य उस पात्र को दर्शाता है जिसके द्वारा ये सारी सेवकाईयां प्रगट होती हैं। एक सिद्ध और सम्पूर्ण मनुष्य में सिद्धता के साथ कार्य करती हैं। अब वे उसी पात्र अर्थात् अलग अलग मनुष्य के द्वारा कार्य करता है। यह मसीही अगुवा है।

ख. यदि चारों प्रकार के अगुवों को सिद्धता और पूर्णता के साथ कार्य करना है तो उन्हें एक से अधिक पात्रों में होकर प्रगट होना होगा। इसे ही बहुमुखी अगुवाई कहा जाता है।

मसीही अगुवा

चर्चा विषय

टिप्पणियाँ -

टिप्पणियों पर चर्चा करें और यदि अगुवाई के चेहरे को लेकर कोई प्रश्न उठता है तो उसका उत्तर दें।

छ. अगुवाई पर कार्यपृष्ठ।

कक्षा की क्रिया कलापः

(गृहकार्य तथा कक्षा में की जाने वाली गतिविधि के जैसे इस्तेमाल करें)।

१. आपके जीवन में अगुवाई से जुड़े तीन सर्वाधिक महत्वपूर्ण अनुभव क्या हैं? प्रत्येक की वर्णन करें।
 - इस स्थिति में कौन से सम्बन्ध शामिल थे?
 - क्या उनके बीच कोई झगड़े थे? उनमें से एक या दो का वर्णन करें।
 - आपके पास क्या ज़िम्मेदारियाँ और अधिकार थे?
 - आपकी क्या भूमिका थी? (एक पिता, भाई, मित्र, कर्मचारी, विशेषज्ञ, इत्यादि)।
 - एक अच्छा अनुभव क्या है?
२. निम्नलिखित वाक्यों के साथ प्रारम्भ करते हुए, अगुवाई के कार्यों और स्वभाव से जुड़े हुए दस वाक्यों को लिखें, उदाहरण के लिए:
 - अगुवाई करने का अर्थ दूसरों को लक्ष्य की ओर मार्गदर्शन करना है।
 - अगुवाई का अर्थ दूसरों को किसी काम को करने के लिए प्रभावित करना है।
 - अगुवाई का अर्थ...
३. निम्नलिखित वाक्यों के साथ प्रारम्भ करते हुए, एक मसीही के कार्यों और स्वभाव से जुड़े हुए दस वाक्यों को लिखें, उदाहरण के लिए:
 - एक मसीही यीशु मसीह का अनुयायी होता है।
 - एक मसीही जन वह व्यक्ति है जिसका सम्बन्ध यीशु से बना हुआ है।
 - एक मसीही जन...

मसीही अगुवा

टिप्पणियाँ -

४. प्रश्न #२ से एक वाक्य तथा प्रश्न #३ से एक वाक्य को लेकर १० वाक्यों को रचें जो “एक मसीही अगुवा...” से प्रारम्भ होते हों। उदाहरण के लिए:

- एक मसीही अगुवा वह व्यक्ति है जो लोगों की मसीह का अनुसरण करने में अगुवाई करता है (यहां पर २ क को ३ क के साथ जोड़ा गया है)।
- एक मसीही अगुवा दूसरों को यीशु के लिए जीवन व्यतीत करने में अगुवाई करता है।
- एक मसीही अगुवा....

एक अगुवे के रूप में अपने तीन सामर्थी क्षेत्रों को सम्बोधित करें।

एक अगुवे के रूप में अपने तीन कमजोर क्षेत्रों को सम्बोधित करें।

अगुवे पैदा होते हैं? या अगुवे तैयार किये जाते हैं? चर्चा करें।

चर्चा विषय

कक्षा में चर्चा करने तथा दूसरों को बताने के लिए कार्यपृष्ठ में दिये गये सुझावों का इस्तेमाल करें।

III. मसीही अगुवाई में कब और कहाँ।

क. हमें एक अगुवा होने का अवसर कब मिलेगा?

१. १ तीमुथियुस ३:५ का अध्ययन करें। निम्नलिखित संरचना पर ध्यान दें।

प्रबन्ध करें

रखवाली करें

अपने घर का

परमेश्वर की कलीसिया का

क. जब परमेश्वर की कलीसिया को परमेश्वर के घर में स्थानान्तरित किया जा सके (इफिसियों २:१९)।

ख. “प्रबन्ध” के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला ग्रीक शब्द वही है जिसे कलीसिया के अगुवे के कामों का वर्णन करने के लिए इस्तेमाल किया गया है (उदाहरण के लिए १तीमुथियुस ५:१७)।

मसीही अगुवा

२. पौलुस यहां पर कह रहे हैं कि, “यदि आप अपने ही घर का प्रबन्ध नहीं कर सकते, तब आप किस तरह से परमेश्वर के भवन की देखभाल कर पाएंगे? “यदि आप छोटे छोटे कार्य नहीं कर पाते हैं, तो आप किस प्रकार से बड़े बड़े काम कर पाएंगे?”

क. लूका १६:१० का अध्ययन करें।

ख. क्या कहां इसकी शुरूआत करते हैं? हम छोटे छोटे कामों से प्रारम्भ करते हैं। हमें अपने परिवार से प्रारम्भ करना चाहिए। जो कुछ परमेश्वर ने आपके हाथों में उसके साथ अच्छे अगुवे बने तब हमें और भी अधिक दिया जाएगा।

३. हम अपने आप को अच्छे अगुवे के रूप में साबित कर सकते हैं। हमारी सम्भावित योग्यता का अन्दाज़ा हमें ठीक वैसी ही लेकिन थोड़ी कम जटिल परिस्थितियों में हमारी वास्तविक योग्यता के द्वारा पता चल सकता है।

४. हम अगुवाई की योग्यता को विकसित तथा उसका अभ्यास कर सकते हैं।

क. “जो थोड़े में विश्वासयोग्य होगा, वह ज़्यादा में भी विश्वासयोग्य होगा।” क्योंकि थोड़े में विश्वासयोग्य होने से ही अधिक में विश्वासयोग्य होने की योग्यता उत्पन्न होती है।

ख. अच्छी आदतों का विकास छोटे छोटे व नियमित कामों के द्वारा होता है। बुरी आदतों का विकास छोटे छोटे व नियमित कामों के द्वारा होता है।

- १) किसी न किसी तरीके से आप अपनी योग्यताओं को अपने दैनिक जीवन, दैनिक कामों, तथा अपने जीवन के बुनियादी क्षेत्रों में करते हैं।
- २) यदि मैं अपने घर में (या अन्य क्षेत्रों में जहां परमेश्वर ने मुझे अधिकार दिया हुआ है) अच्छी तरह से अगुवाई नहीं करता हूं, तब मुझे यह आशा करने का कोई अधिकार नहीं है कि मैं कलीसिया में अच्छी तरह से अगुवाई कर पाऊंगा।
- ३) यदि मैं घर में अच्छी तरह से अगुवाई करता हूं, तब मैं सुनिश्चित हो सकता हूं कि अपने भीतर कलीसिया की अगुवाई करने की प्रतिभाओं को विकसित कर रहा हूं।

टिप्पणियाँ -

मसीही अगुवा

टिप्पणियाँ -

५. हमें कब एक अगुवा बनने का अवसर प्राप्त होगा? अभी। अगर हमने अभ्यास किया और अपने आप को साबित किया है, तब परमेश्वर हमें और भी अधिक अवसर प्रदान करेंगे।

अपना उदाहरण लिखें:

चर्चा विषय

प्रश्न पर ध्यान दें: क्या आप अगुवा बनने के लिए आवश्यकता चरित्र और उन योग्यताओं पर ध्यान दिये बिना ही, अधिक ज़िम्मेदारियों और अधिकारों को प्राप्त करने की प्रतीक्षा कर रहे हैं, या फिर आप अपनी वर्तमान परिस्थितियों में अपने चरित्र और प्रतिभाओं का विकास कर रहे हैं? याद रखें, यह सिद्धान्त अगुवाई के स्तर को बढ़ाने के लिए भी लागू होता है। चर्चा करें।

ख. कहां पर हमारे अगुवाई का अधिकार लागू होता है?

१. मेरी अगुवाई कहां प्रारम्भ होती है और कहां पर खत्म होती है?

२. रोमियों १३:१ का अध्ययन करें।

क) परमेश्वर को सभी अधिकारियों पर अधिकार है।

ख) परमेश्वर ने अधिकारों के अलग अलग नियम बनाए हैं जिनका उल्लंघन किया जाना चाहिए।

मसीही अगुवा

लेखक की टिप्पणी:

निम्नलिखित बातों का उद्देश्य केवल चर्चा को प्रेरित करना है। इसका सरोकार कोई सार्वजनिक नीति बनाना नहीं वरन अधिकारी के अधिकार क्षेत्र के महत्व अस्तित्व को प्रगट करना है। परमेश्वर ने ही उन्हें स्थापित किया है। मनुष्य ने इन नियमों का उल्लंघन नहीं करना चाहिए। यह ले जानना एक मसीही अगुवे की जिम्मेदारी है कि उसका अधिकार कहां प्रारम्भ और कहां पर समाप्त होता है। हमें इस क्षेत्र में बहुत सावधान होना है।

चर्चा विषय

अधिकारी के विभिन्न अधिकार क्षेत्रों पर चर्चा करने तथा उन्हें लागू करने के लिए पृष्ठ २४ में दिये गये आरेख का अध्ययन करें।

टिप्पणियाँ -

मसीही अगुवा

टिप्पणियाँ -

अधिकार	परिवार	कलीसिया	स्थिति
बच्चे पैदा करने का	उत्प. १:२८ उत्प. २:२४ भजन. १२७:३-५	यह अधिकार कलीसिया को नहीं दिया गया है। अतः किसी भी कलीसिया द्वारा अधिकार को जन्म सिद्ध अधिकार के रूप में इस्तेमाल करना गलत है।	यह अधिकार किसी राज्य या राष्ट्र को नहीं दिया गया है। उदाहरण के तौर पर, चीन में माताओं द्वारा बच्चे जनने की दर को सीमित करना बाइबल आधारित नहीं है। उसी प्रकार से रोमानिया की माताओं पर बच्चे पैदा करने पर ज़ोर देना भी बाइबल के अनुसार ठीक नहीं है।
शिक्षा देने का	व्यव. ४:९,१०; व्यव. ६:४-९, २०-२५; नीति. ६:२०-२३	व्यव. १०: १२,१३ व्यव. २९:२९	कुछ सरकारी कार्यों को छोड़कर कोई अधिकार नहीं दिया गया है। पुलिस और सेना से जुड़ा प्रशिक्षण इसके उदाहरण हैं। (कर देकर चलाये जा रहे स्कूलों का क्या साशय है)।
गरीबों, ज़रूरतमंदों, विधवाओं, और अनार्यों की देखभाल करने	व्यव. १५:४-११	व्यव. १६:९-१५ १यूहन्ना ३:१७ याकूब १:२७ मत्ती २५:३१-४०	कोई अधिकार नहीं दिया गया है (कल्याणकारी पद्धति, सामाजिक कार्यों और साम्यवाद का क्या अभिप्राय है?)
कर देने का	कुछ नहीं	कुछ नहीं। हालांकि कलीसिया इसे कभी कर या टैक्स के नाम से नहीं पुकारती, लेकिन कई पद्धतियों में दशमांश की सच्चाई टैक्स के जैसे ही है। (उदाहरण के लिए, एक कलीसिया अपने सदस्यों के दसमांश की मांग करता या उन पर ज़ोर देता है)।	I शमू. ८:१४-१८ रोमियों १३:६,७ लूका २०:२०-२६
अनुशासित करने या दण्डित करने का	छड़: अनुशासन नीति. १३:२४; नीति. २९:१५,१७ इफि. ६:१४ (यू.एस.ए में माता-पिता से इस अधिकार को छिनने का प्रयास किया जा रहा है)।	कार्यकर्ता: अनुशासन II कुरि. १३:१, I कुरि. ४:२१, I कुरि. ५:१-१३ (यू.एस.ए में कलीसिया से इस अधिकार को छिनने का प्रयास किया जा रहा है)	तलवार: न्याय रोमियों १३:१-५ १ पतरस २:१३-१४ लैट्य. १९:१५ व्यव. २५:१-३ व्यव. १९:१-१०
मारने का	कोई अधिकार नहीं	कुछ (इस विषय की समझ के कारण धर्मयुद्ध जैसी दुर्घटनाएं हो जाती हैं)।	उत्प. ९:६ व्यव. १९:११-१३ निर्ग. २१:१२-१४ लैट्य. २४: १७,२१ रोमियों १३:४

मसीही अगुवा

IV. परमेश्वर कुछ लोगों को क्यों अगुवा होने के लिए चुनते हैं?

टिप्पणियाँ -

लेखक का उदाहरण:

एक अगुवे का चरित्र और उसका आचरण हवाई अड्डे पर लगी घड़ी के समान है। हवाई अड्डे पर लगी हुई घड़ी हमारी व्यक्तिगत घड़ियों से ज्यादा महत्वपूर्ण होती हैं क्योंकि बहुत से लोग उस घड़ी को देखकर अपनी घड़ियों को समय ठीक करते हैं। इसी प्रकार से एक अगुवे का चरित्र होता है। बहुत से लोग अपने अगुवे के आचरण को आधार मानकर अपने लिए मानक तय करते हैं। अगुवों की एक बड़ी जिम्मेदारी होती है। परमेश्वर क्यों कुछ लोगों को अगुवे के रूप में चुनते हैं। इस उत्तर व्यक्ति के बाहर नहीं पाया जाता है। इसका उत्तर व्यक्ति के भीतर पाया जाता है।

अपना उदाहरण लिखें:

क. परिचय।

१. शमूएल एक राजा की तलाश में थे। उन्होंने दाऊद पर ध्यान नहीं दिया। वह बहुत छोटा था। शमूएल ने सोचा परमेश्वर का चुना हुआ एलिआब होगा, क्योंकि वह लम्बा था। तब परमेश्वर ने बातचीत की। परमेश्वर ने उन्हें बताया कि वह लोगों के बाहरी रूप को देखकर चुनाव नहीं करते हैं। वह लोगों को उनके मन की दशा के हिसाब से चुनते हैं (१शमूएल १६:६,७)।
२. मनुष्य प्रायः किसी के बाह्य रूप को देखकर उसका चुनाव करते हैं। वे अधिकतर मामलों में उत्तम बातों को चुनाव करते हैं। मनुष्य प्रायः उन लोगों का चुनाव करते हैं चतुर, बलवन्त, तेज, धनी और रौबदार, तथा अन्य गुणों से धनी होते हैं। कई बार ये गुण व विशेषताएं बाहर से देखने में मज़बूत नज़र आती हैं, लेकिन वे भीतर से बहुत कमज़ोर होते हैं।

मसीही अगुवा

टिप्पणियाँ -

लेखक का उदाहरण:

ये बाहरी वरदान से परिपूर्ण अगुवे सस्सी खेल की कारों के समान होते हैं। वे देखने में तो बहुत सुन्दर दिखती हैं लेकिन आसानी से टकरा जाती हैं।

बाहरी वरदानों से परिपूर्ण अगुवे रेत पर बने हुए घरों के समान हैं (मती ७:२७)। जब वर्षा, आंधी और तूफान आता है, तब वह घर गिर जाता है। वह बाहर से देखने में तो सुन्दर दिखता है लेकिन भीतर से कमजोर होता है। वर्षा, आंधी और जीवन की बाढ़ों जैसे रूचीकर तरीके होते हैं जिसके द्वारा अगुवों पर ध्यान केन्द्रित किया जा सकता है। एक अगुवा केवल एक आकर्षक व्यक्ति से अधिक होना चाहिए।

अपना उदाहरण लिखें:

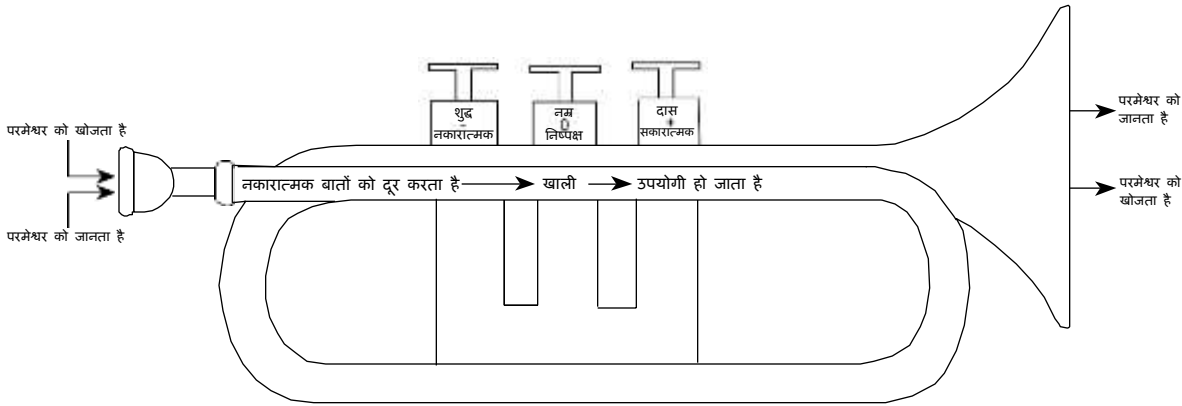
३. परमेश्वर कुछ लोगों को क्यों एक अगुवे के रूप में चुनते हैं? परमेश्वर एक अगुवे में किन विशेषताओं की खोज करते हैं? हम निम्नलिखित परिभाषाओं का अध्ययन करते हुए इन प्रश्नों का उत्तर देते हैं:

क. एक बाइबल आधारित अगुवा, पवित्र, विनम्र, परमेश्वर को खोजने और उन्हें जानने वाला दास होता है।

ख. एक अगुवा वास्तव में एक उपकरण होता है जिसके द्वारा परमेश्वर दूसरों की अगुवाई करते हैं। हम अपनी परिभाषा को एक तुरही के रूप में परिभाषित कर सकते हैं।

मसीही अगुवा

टिप्पणियाँ -



१) अगुवा एक उपकरण होता है। अगुवाई का प्रारम्भ परमेश्वर को खोजने और उसे जानने के साथ प्रारम्भी होता है।

क) जो अगुवा परमेश्वर को खोजता है वह उन्हें जान जाएगा (नीतिवचन ८:१७)।

ख) जो अगुवा परमेश्वर को जानता है वह परमेश्वर की खोज करेगा (यूहन्ना १०:४)।

२) अगुवा एक उपकरण होता है जिसके द्वारा परमेश्वर दूसरों की अगुवाई करते हैं। इसलिए कुंजी वचन “खाली” है।

क) सर्वप्रथम, शुद्धता नकारात्मक बातों को दूर कर देती है। यह खालीपन के लिए तैयार करती है।

ख) दूसरा, नम्रता खालीपन को निर्माण करती है।

ग) तीसरा, सेवा खालीपन को सकारात्मक रूप में इस्तेमाल करती है। यह खालीपन को परमेश्वर व दूसरों की ओर प्रेरित करती है।

ख. अगुवा शुद्ध होता है।

१. अगुवे के जीवन में शुद्धता का महत्व।

क. अगुवे की विशेषता यह है कि वह किसी व्यक्ति को यीशु के एक कदम और नज़दीक लाता है।

ख. अगुवे की विशेषता यह है कि वह किसी व्यक्ति को यीशु के एक कदम और नज़दीक लाता है।

मसीही अगुवा

टिप्पणियाँ -

- ग. किसी रास्ते पर चलना है जानने की मुख्य वजह यह जानना है कि पिता क्या कर रहे हैं। (यूहन्ना ५:१९)।
- घ. पिता के कामों को जाने की वजह यह है कि हम शुद्ध हो सकें (मती ५:८)।

चर्चा विषय

निम्नलिखित उदाहरणों पर चर्चा करें।

मन के शुद्ध बनें। (मती ५:८)



ताकि देख सकें कि पिता क्या कर रहे हैं। (यूहन्ना ५:१९)



देखें कि किस मार्ग में जाना है।



ताकि किसी को मसीह के एक कदम नजदीक ला सकें।

२. कामों और विचारों में शुद्धता।

क. दानिय्येल एक अच्छा उदाहरण है (दानि. १:८)।

ख. एक अगुवा निर्दोष होना चाहिए (१तीमु. ३:२)। वह बेदाग होना चाहिए।

१) उसे किस बात की अनुमति है? उसे किस बात की अनुमति नहीं है? (यह एक ऐसा प्रश्न है जो एक अगुवे को अपने तथा दूसरों के लिए पूछना चाहिए)।

२) उत्तर है: निर्भर करता है! बाइबल के सिद्धान्त हैं जो हमें हर परिस्थिति में उत्तर प्रदान कर सकते हैं। लीरोय एम्स बी द लीडर यू वॉन्ट टू बी में इसे ६.८.१० सिद्धान्त कहते हैं।^१

क) ६ बराबर है १कुरि ६:१२ के: यह बहुत सहायक है? क्या यह मुझे नियन्त्रित करता है?

ख) ६ बराबर है १कुरि ८:१२,१३ के: क्या इससे दूसरों को ठोकर लगेगी?

ग) १० बराबर है १ कुरिन्थियों १०:३१: क्या इससे परमेश्वर को महिमा मिलती है?

चर्चा विषय

एक मसीही अगुवे लिए अनुमति दिये गये व्यावहारों पर चर्चा करने व उसे लागू करने को प्रोत्साहित करने के लिए निम्नलिखित सारणी का इस्तेमाल करें।

मसीही अगुवा

	६		८	१०
प्रश्न ➡ सुझावित उत्तर ⬇	क्या यह सहायक है?	क्या वह मुझे नियंत्रित करता है?	क्या इससे दूसरों को ठेस लगेगी?	क्या इससे परमेश्वर को महिमा मिलती है।
आप कर सकते हैं	जी हाँ	नहीं	नहीं	जी हाँ
नहीं! ऐसा न करें	नहीं	जी हाँ	जी हाँ	नहीं
सावधान रहें। इसे नज़रअंदाज करना अच्छा होगा।	उदासीन	अभी नहीं। लेकिन यह संभव है।	हो सकता है यदि मैं सावधान न रहूँ तो।	यह मेरे स्वभाव पर निर्भर करता है।

टिप्पणियाँ -

लेखक की टिप्पणी:

हम व्यवहारों को लेकर अति कट्टरवादी नहीं हो सकते हैं। कई बार उत्तर होगा: सावधान रहें। अगुवे को अन्य व्यक्ति को स्वयं अपने निर्णय लेने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। अगुवे को अपने आप भी जितना हो सके समस्या से दूर रहने का प्रयास करना चाहिए। यदि कोई सन्देह है तो, अगुवे को उस परिस्थिति से बच लेना चाहिए। उसे दूसरों को भी ऐसा ही करने की सलाह देनी चाहिए।

भिन्न परिस्थितियाँ भिन्न लोगों को भिन्न तरीके से प्रभावित करती हैं। भिन्न लोगों की भिन्न कमज़ोरियाँ होती हैं। अतः, यह सम्भव है कि जो परिस्थिति या गतिविधि एक व्यक्ति के लिए लाभदायक हो दूसरे के लिए उसी से बचना जरूरी है।

चर्चा विषय

एक मसीही अगुवे के लिए अनुमति दिये गये व्यवहारों पर चर्चा करने तथा उनका इस्तेमाल करने के लिए निम्नलिखित परिस्थितियों या गतिविधियों का इस्तेमाल करें।

१. क्या मैं एक प्याला दाखरस का पी सकता हूँ?
२. क्या मैं किसी विशेष टेलीविज़न कार्यक्रम को देख सकता हूँ?
३. क्या मैं सुसमाचार सुनाने के लिए मदिरालय में जा सकता हूँ?
४. क्या मैं कॉफी पी सकता हूँ?
५. क्या मैं उस विवाह या पार्टी में जा सकता हूँ जहाँ पर मदिरा परोसी जाती है?

पहले दिखाए गये ६-८-१० सिद्धान्तों को उपयोग करें। यदि उत्तर स्पष्ट नहीं है, तो परिस्थिति या गतिविधि से बचना ही अच्छा होगा। बहुत कुछ प्रश्न के उचित उत्तर पर निर्भर करेगा: "मेरे लक्ष्य क्या हैं? मैं इस काम को क्यों करना चाहता हूँ?"

मसीही अगुवा

टिप्पणियाँ -

३. शुद्धता का अर्थ परमेश्वर के उद्देश्य के लिए एक पात्र बनना।

क. परमेश्वर की योजना में शुद्धता बहुत जरूरी है क्योंकि अगुवे परमेश्वर के लिए अगुवाई नहीं करते हैं। परमेश्वर अगुवों के द्वारा अगुवाई करते हैं जो उसकी इच्छा पूरी करने के लिए पात्र हैं।

ख. हम यहां पर “पात्र के धर्मशास्त्र” के बारे में बातें कर रहे हैं। परमेश्वर अपने लोगों या “पात्रों” के द्वारा कार्य करते हैं।

१) अतः, हम “पात्र अगुवे” के बारे में बातें कर सकते हैं। शुद्धता का पात्र अगुवे से घनिष्ठ सम्बन्ध है (२ तीमोथियुस २:२१)।

२) २ तीमोथियुस २:१६-२२ का अध्ययन करें।

क) “अपने आपको शुद्ध करता है” (पद २१ में) शुद्धता को दर्शाता है (सन्दर्भ का अध्ययन करें और पद १६, १९ ख, २२ क पर ध्यान दें)।

ख) जो व्यक्ति अपने आप को शुद्ध करता है वह प्रत्येक भले काम के लिए “तैयार” है (शुद्धता एक व्यक्ति को खाली होने के लिए तैयार करती है, जो व्यक्ति को सेवा करने तैयार करती है)।

ग) परमेश्वर जिस बर्तन को इस्तेमाल करते हैं वह उसके परमेश्वर द्वारा भरे जाने के लिए शुद्ध होना चाहिए।

घ) यह हमारी संरचना पर निर्भर नहीं करता कि हम आदर के कामों के लिए इस्तेमाल होंगे या फिर अनादर के कामों के लिए। यह हमारी पवित्रता की दशा है (१ शमूएल १६:७)।

मसीही अगुवा

४. प्रतिबद्धता की शुद्धता।

ग. पवित्रता का शाब्दिक अर्थ है “अलग किया जाना।” हम शुद्धता को परमेश्वर के प्रति प्रतिबद्धता, समर्पण और परमेश्वर के प्रति निष्ठा के रूप में संदर्भित कर सकते हैं। एक अगुवे में इस प्रकार की शुद्धता होनी चाहिए।

१) शिमशोन विचारों और कार्यों के संदर्भ में पवित्रता का पात्र नहीं था।

२) हालांकि, वह प्रतिबद्धता और समर्पण के संदर्भ में शुद्धता का पात्र था। वह परमेश्वर को समर्पित था (न्यायियों १३)।

क) परमेश्वर उन लोगों में से भी अगुवों का निर्माण कर सकते हैं जो सिद्ध नहीं हैं जब तक कि वे परमेश्वर के प्रति समर्पित हैं।

ख) प्रेम बहुत से पापों को ढाँपता है (१ पतरस ४:८)। समर्पण कई चरित्र दोषों और कमजोरियों को ढाँपता है।

घ. एक अर्थ में, प्रतिबद्धता की शुद्धता विचारों और कार्यों की शुद्धता से अधिक महत्वपूर्ण है। किसी भी और चीज से अधिक जो परमेश्वर हमसे चाहते हैं वह है उनके प्रति हमारी निष्ठा (१ इतिहास २८:९)। तब वह हमारे चरित्र को बदल सकते हैं। तब वह हम में काम कर सकते हैं। तब वह हमारे माध्यम से अगुवाई कर सकते हैं।

चर्चा विषय

एक अगुवे की शुद्धता पर आगे चर्चा करने और किसी भी संबंधित प्रश्न का उत्तर देने के लिए पिछली अवधारणाओं का उपयोग करें।

टिप्पणियाँ -

मसीही अगुवा

टिप्पणियाँ -

ग. अगुवा विनम्र है।

१. लिरॉय इम्स कहते हैं, “एक सम्पूर्ण और खुशहाल जीवन का मार्ग स्वयं से अपनी आँखों को हटाना और दूसरों के लिए जीना है। एक अगुवा तब ही समृद्ध होगा जब वह उस भावना के साथ चलेगा।”^२

२. अगुवे की नम्रता को उसे दूसरों पर ध्यान देने में सक्षम बनाना चाहिए। इसे अगुवे को परमेश्वर पर ध्यान केंद्रित करने में सक्षम बनाना चाहिए।

क. परमेश्वर अगुवों का इस्तेमाल करते हैं। हालाँकि, अगुवे के लिए यह बहुत आसान है कि जब परमेश्वर उसके द्वारा कुछ करते हैं जो वह स्वयं की ओर संकेत करें।

ख. दानिय्येल २:२७-३० का अध्ययन करें।

१) दानिय्येल ने अपनी ओर संकेत करने के प्रलोभन का विरोध किया।

२) परमेश्वर ने दानिय्येल के द्वारा अद्भुत काम किये, फिर भी दानिय्येल ने परमेश्वर की ओर संकेत किया।

ग. अगुवे को यशायाह ४२:८ के निहितार्थों पर विचार करना चाहिए।

३. विनम्रता की कमी एक अगुवे के सेवकाई के जीवन में दो मूल समस्याओं को पैदा करेगी:

क. अज्ञानता।

१) एक अगुवा अज्ञान होने को बर्दाश्त नहीं कर सकता। हालाँकि, एक अगुवा जो कि विनम्र नहीं है वह एक ऐसा अगुवा है जिसे सिखाया नहीं जा सकता। वह दूसरों से सलाह नहीं ले सकता। वह सीख नहीं सकता और वह बढ़ नहीं सकता (देखें नीतिवचन ११:१४ और १५:२२)।

२) एक समय के बाद उसका अगुवापन प्रभावहीन हो जाएगा।

मसीही अगुवा

ख. असुरक्षा।

- १) घमंड अगुवे को स्वयं पर ध्यान केंद्रित करने के लिए मजबूर करता है। वह इस बात की चिंता करता है कि वह दूसरों के सामने कैसा दिखता है। वह हमेशा आइने में देखता रहता है। अनिवार्य रूप से, वह पागल हो जाता है। वह अपने बारे में और न ही अपनी स्थिति के बारे में सुनिश्चित होता है। वह बहुत असुरक्षित हो जाता है।
- २) एक समय के बाद उसका अगुवापन प्रभावहीन हो जाएगा।
- ३) बहुत बार, उसकी असुरक्षा का परिणाम अपने चारों ओर सबकुछ और सब लोगों पर नियंत्रण करने की कोशिश करना होगा। वह अगुवाई करने के बजाय अन्धेरे करना शुरू कर देता है।

४. विनम्रता अगुवे को बनाए रखेगी।

क. विनम्रता के बिना, एक अगुवा अपनी सफलता से अभिभूत हो जाएगा। वह अपने बारे में बहुत अधिक सोचने लगेगा। उसका अगुवापन नष्ट हो जाएगा।

ख. इस कारण से, पौलुस अगुवों के लिए आवश्यकता प्रदान करते हैं जो १ तीमुथियुस ३:६ में पाई जाती है।

५. परमेश्वर उन्हें इस्तेमाल करते हैं जो विनम्र हैं (यशायाह ६६:२)। पुराने नियम से सबसे महत्पूर्ण अगुवों में से एक मूसा थे। साथ ही वे पृथ्वी पर सबसे विनम्र व्यक्ति थे (गिनती १२:३)।

टिप्पणी: मूसा कि विनम्रता का एक अध्ययन MOTMOT (मोटमोट) पाठ्यक्रम मसीही चरित्र में पाया जा सकता है।

अपना उदाहरण लिखें:

टिप्पणियाँ -

मसीही अगुवा

टिप्पणियाँ -

चर्चा विषय

विनम्रता के सकारात्मक प्रभावों और विनम्रता की कमी के नकारात्मक प्रभावों पर चर्चा करने के लिए पिछली अवधारणाओं का उपयोग करें।

घ. अगुवा एक दास है।

१. जॉन हाग्वै कहते हैं, “केवल वही व्यक्ति जो अपने आप को एक दास के स्थान के अधीन कर लेता है और मसीह को नियमित रूप से अपनी सामर्थ्य को उसमें उंडेलने देता है, वह एक दल के भीतर उस विशेष प्रभाव को सावधानीपूर्वक लाभकारी स्थायित्व के लक्ष्य की ओर ले जाने के लिए सुसज्जित है जो दल की वास्तविक आवश्यकताओं को पूरा करता है।”^३
२. अगुवेपन की क्षमता एक दास के हृदय पर निर्भर करती है (मरकुस १०:४३, ४४)।
 - क. यीशु, जो इतिहास के सबसे बड़े अगुवे थे अपने जीवन का वर्णन यह कहने के द्वारा करते हैं, “क्योंकि मनुष्य का पुत्र इसलिये नहीं आया कि उसकी सेवा टहल की जाए, परन्तु इसलिये आया कि आप सेवा टहल करें” (मरकुस १०:४५)।
 - ख. बाइबल आधारित अगुवापन एक कारण नहीं है। यह एक परिणाम है। यह सेवा का एक परिणाम है। सांसारिक अगुवापन सेवा के बजाय अधिकार का इस्तेमाल करता है (मरकुस १०:४२-४४)।
३. जुडसन कॉर्नवाल हमें याद दिलाते हैं कि “परमेश्वर हमारी महानता में दिलचस्पी नहीं रखते। वह हमारी उपलब्धता में दिलचस्पी रखते हैं। हाँ, दास सबसे बड़ा है। लेकिन फिर भी दास सबसे बड़ा नहीं होता। वह केवल महानता उपलब्ध कराता है।”^४
 - क. हम वह सेवा नहीं हैं जो दूसरों को भरती है या भराना प्रदान करती है। हम केवल वह बाँटते या देते हैं जिससे हम प्रभु के द्वारा भरे गए हैं।
 - ख. हम सामग्री नहीं हैं। हम पात्र (वर्तन) हैं।
 - ग. हम स्रोत नहीं हैं। हम साधान हैं।
 - घ. हम जीवन का जल नहीं हैं। हम वह नदी हैं जो जीवन के जल को थामती और सूखी और प्यासी भूमि तक ले जाती हैं।
 - ङ. हम फिर से “पात्र धर्मशास्त्र” को संदर्भित कर रहे हैं (२ कुरिन्थियों ४:७)।

टिप्पणी: सेवा का एक गहन अध्ययन MOTMOT (मोटमोट) पाठ्यक्रम कलीसिया प्रणाली में पाया जा सकता है।

मसीही अगुवा

चर्चा विषय

टिप्पणियाँ -

अगुवे पर एक दास होने के लिए परमेश्वर की बुलाहट पर चर्चा करने के लिए पिछली अवधारणाओं का उपयोग करें। साथ ही, उन समस्याओं पर चर्चा करें जिनका आपने अनुभव किया है जब एक अगुवा एक दास नहीं होता।

ड. अगुवा परमेश्वर को खोजता और जानता है।

१. अगुवेपन की क्षमता यहीं से शुरू होती है। यह महान आज्ञा के साथ शुरू होती है (मती २२:३७, ३८)।
२. एक चरवाहे लड़के के रूप में दाऊद ने परमेश्वर का साथ बहुत समय बिताया। इससे उन्हें एक अगुवा होने के लिए तैयार किया।
३. परमेश्वर अगुवे की सामर्थ्य की स्रोत है। परमेश्वर के साथ संगति सामर्थ्य तक पहुँच हैं।
४. परमेश्वर को एक अगुवा मिल जाता है जब वे उन्हें कोई ऐसा व्यक्ति मिलता है जो परमेश्वर के साथ संगति को अपने जीवन में प्राथमिकता बनाने का इच्छुक हो। एक ऐसा व्यक्ति जो अपने जीवन को परमेश्वर के साथ एक नजदीकी, व्यक्तिगत और सक्रिय संबंध पर केंद्रित करता है। यह अगुवेपन का “कौन” है। ऐसे व्यक्ति के द्वारा परमेश्वर:
 - क. अपनी सामर्थ्य का प्रगटीकरण करेंगे (यह अगुवेपन का “कैसे” है)।
 - ख. अपना दिशा निर्देश देंगे (यह अगुवेपन का “क्या”, “कब”, और “कहाँ” है)।
 - ग. अपनी बुद्धि को प्रदर्शित करेंगे (यह अगुवेपन का “क्यों” है)।
५. परमेश्वर में खोजना और जानने सीधे विश्वास से संबंधित है (इब्रानियों ११:६)। एक अगुवे को विश्वास का व्यक्ति होना चाहिए।

टिप्पणी: “परमेश्वर को जानना” का एक गहन अध्ययन MOTMOT (मोटमोट) पाठ्यक्रम परमेश्वर को जानना I और परमेश्वर को जानना II में पाया जा सकता है। विश्वास का एक अध्ययन MOTMOT (मोटमोट) पाठ्यक्रम विश्वास में पाया जा सकता है।

मसीही अगुवा

टिप्पणियाँ -

अपना उदाहरण लिखें:

चर्चा विषय

एक अगुवे के रूप में परमेश्वर के साथ समय बितना आपके लिए आवश्यक क्या हैं पर चर्चा करने के लिए पिछली अवधारणाओं का उपयोग करें। परमेश्वर के साथ अपने समय को बनाए रखने के लिए बहुत व्यस्त होने के परिणामों पर चर्चा करें।

च. सारांश।

१. प्रभु के लिए एक अगुवे का प्रेम परमेश्वर के लिए एक उत्साह को उत्पन्न करेगा। यह प्रेम और उत्साह उन लोगों तक पहुँचेगा जिनकी वह अगुवाई कर रहा है।
२. एक बाइबल आधारित अगुवा शुद्ध, विनम्र, दास, है जो परमेश्वर को खोजता और जानता है।
 - क. बेशक, यह परिभाषा पूर्ण नहीं है। हम कई अन्य वर्णात्मक गुण जोड़ सकते हैं। हालांकि यह कुछ बिंदु सबसे महत्वपूर्ण हैं।
 - ख. इस परिभाषा में प्रेम है।
 - १) प्रेम के बिना शुद्धता आत्म-धार्मिकता है।
 - २) प्रेम के बिना विनम्रता झूठी विनम्रता है।
 - ३) प्रेम के बिना सेवा का कोई लाभ नहीं (१कुरिन्थियों १३:३)।
 - ४) प्रेम के बिना परमेश्वर को खोजना और जानना कुछ भी नहीं है (१कुरिन्थियों १३:२)।
 - ५) इस प्रकार, इन सभी गुणों में प्रेम शामिल होना चाहिए।

मसीही अगुवा

- ग. एक मसीही अगुवे को परमेश्वर के करीब होना चाहिए। उसे परमेश्वर को अपने सम्पूर्ण हृदय से प्रेम करना चाहिए (मती २२:३७, ३८)।
- घ. उसे दूसरों के भी करीब होना चाहिए जिनकी वह अगुवाई कर रहा है। उसे अपने समान अपने पड़ोसी से प्रेम करना चाहिए (मती २२:३९)।
३. अनुप्रयोग।
- क. हम कैसे और अधिक शुद्ध हो सकते हैं? हम कैसे और अधिक विनम्र बन सकते हैं? हम कैसे और अधिक एक दास हो सकते हैं? हम कैसे परमेश्वर को और अधिक खोज और जान सकते हैं?
- ख. विशिष्ट बनें - कुछ करने का निर्णय लें - अपने उद्देश्य परिभाषित करें, अच्छी तरह से परिभाषित लक्ष्य बनाएं, और एक योजना बनाएँ - अब, इसे करें!

टिप्पणियाँ -

लेखक का सुझाव:

एक प्रार्थना सहभागी ढूँढें। उस व्यक्ति के साथ प्रतिदिन प्रार्थना करें। प्रार्थना के दौरान पापों के अंगीकार का एक विशेष समय रखें। विशेष रूप से अशुद्धता के पापों पर ध्यान दें।

विनम्रता के लिए प्रतिदिन प्रार्थना करें। परमेश्वर से कहें कि वह आपको आपके विचारों, शब्दों, कार्यों, और जीवन शैली के प्रति कायल करें। उनसे कहें कि वह घमंड को विनम्रता से बदल दें।

किसी के लिए अपनी सेवा को स्वयंसेवा के रूप में दें। इसे बिना शर्त का बनाने का प्रयास करें।

दैनिक भक्ति के एक योजना बनाएँ। अपने दिन को प्रभु के साथ संगति के तीन नियोजित समयों (सुबह, दोपहर, और रात) के आस-पास व्यवस्थित करने की कोशिश करें। प्रार्थना करें। बाइबल पढ़ें। उसकी स्तुति और आराधना करें। प्रतिदिन कम से कम एक घंटे की योजना बनाने की कोशिश करें।

मसीही अगुवा

टिप्पणियाँ -

छ. एक अच्छे अगुवे के अतिरिक्त गुण।

१. **साहस** -- मसीही अगुवे पर कई पुस्तकें अच्छी अगुवाई की एक अनिवार्य आवश्यकता के रूप में साहस पर जोर देती हैं (देखें तीतुस १:९-११)।
२. **बुद्धिमानी** -- कृवि शेष रूप से अच्छे निर्णय और न्याय के क्षेत्र में (देखें गलातियों ६:१)। हम सामान्य ज्ञान, शिष्टता और बुद्धि को शामिल कर सकते हैं (उदाहरण के लिए: अपनी समस्या को कुछ भरोसेमंद और सम्मानित मसीहियों तक पहुंचाएं। अपनी समस्याओं को हर किसी के सामने न लाएं। बहुत सी बातें और बहुत से सहालकार समस्याओं को बढ़ाते हैं)।
३. **दर्शन** -- योजना बनाने और लोगों से आगे रहने की योग्यता है। अगुवे के पास दर्शन होना चाहिए (देखें नीतिवचन २९:१८)।
 - क. उसे दर्शन को सही समय पर, सही लोगों के साथ और सही तरीके से बताने में सक्षम होना चाहिए।
 - ख. उसे निर्देश देने में सक्षम होना चाहिए जो परमेश्वर के हृदय से आते हैं।
 - ग. साथ ही, दर्शन एक कार्य के परिणामों को इसके होने से पहले देखेगा। इस तरीके से अगुवा जिसके पास दर्शन है अपने लोगों की रक्षा कर सकता है।
 - घ. अंत में, यह समझा जाना चाहिए कि वास्तविक दर्शन में क्रिया शामिल है। कार्य के बिना दर्शन केवल एक सपना है। **दर्शन + विश्वास + ऊर्जा = परमेश्वर का एक चलन।**
४. **पहल** -- नए कार्य को शुरू करने की क्षमता है। कुछ संस्कृतियों में पहल को घमंड माना जाता है। हालाँकि, पहल के बिना अगुवेपन का परिणाम गड़बड़ी, और क्रम और संगठन की कमी होता है (देखें यहोशू १:१०-१८)।
५. **सहानुभूति और करुणा** -- दूसरों को समझना, साराहना करना, और उनकी समस्याओं में उनकी सहायता करने की क्षमता है। कई बार, सबसे अच्छे अगुवे वे होते हैं जिनका जीवन कठिन रहा है। अनुभव के द्वारा, वे दूसरों की समस्याओं को समझ सकते हैं (देखें मती ९:३६; इब्रानियों ४:१५)।
६. **ऊर्जा** -- आज्ञाकारिता की क्रिया और कार्य पक्ष को शामिल करती है। अगुवों को उत्पादक होना चाहिए। आलसी अगुवे जैसी कोई चीज नहीं होती! (देखें प्रेरितों १६:९-१२)।

मसीही अगुवा

चर्चा विषय

चर्चा को बढ़ावा देने और अगुवेपन के गुणों को प्रभावशाली तरीके से प्रगट करने के उदाहरण देने के लिए पिछली अवधारणाओं को उपयोग करें।

टिप्पणियाँ -

ज. अपनी अगुवेपन की क्षमता को बढ़ाने और विकसित करने के तरीके।

१. क्या अगुवे पैदा होते हैं या बनाए जाते हैं?

क. अगुवे इस अर्थ में पैदा होते हैं कि अगुवापन परमेश्वर की ओर से एक बुलाहट है। अगुवापन एक वरदान है। सभी लोग अगुवे नहीं हैं।

१) रोमियों १२:८ पर विचार करें -- यहाँ यूनानी शब्द “प्रोइस्टीमी” है, जिसका अर्थ है अध्यक्षता करना, अगुवाई करना, शासन करना या प्रबंधन करना।

२) यह वही यूनानी शब्द है जिसका उपयोग १ थिस्सलुनीकियों ५:१२; १ तीमुथियुस ३:४, ५ए १२, और १तीमुथियुस ५:१७ में किया गया है।

ख. अगुवे इस अर्थ में बनाए जाते हैं कि अगुवापन एक क्षमता है जिसे विकसित किए जाने की आवश्यकता है (देखें नीतिवचन १:५)। महान अगुवेपन के पद उन्हें मिलते हैं जो उनके लिए तैयार होते हैं।

अपना उदाहरण लिखें:

मसीही अगुवा

टिप्पणियाँ -

२. अगुवे कैसे तैयार हो सकते हैं? वे कैसे अपनी क्षमता को विकसित कर सकते हैं?

क. रवैया।

१) उत्कृष्टता के लिए प्रयास करने का दृढ़ संकल्प करें। सामान्यता परमेश्वर या मनुष्य का आदर नहीं करती (देखें १ कुरिन्थियों १४:१२)।

२) पौलुस के समान एक स्वस्थ रवैया रखें (फिलिप्पियों ३:१२ का अध्ययन करें)।

क) यह महसूस करें कि हम सभी को सुधार की आवश्यकता है। कोई कह सकता है कि “यदि आप सीखना बंद कर देते हैं तो आप अगुवाई करना बंद कर देते हैं।”

(१) पौलुस ने कहा, “ऐसा नहीं कि मैं पहले ही पा चुका हूँ।” उन्होंने महसूस किया और स्वीकार किया कि वे सिद्ध नहीं थे।

(२) यह रवैया अगुवों को लगातार बढ़ने और बेहतर होने के योग्य बनाता है।

(३) यह रवैया अगुवे को घमंड से नष्ट होने से बचाता है।

ख) अपने आप में केवल सबसे अच्छे से संतुष्ट हों (देखें मत्ती ५:४८)।

(१) पौलुस ने कहा, “लेकिन मैं आगे की ओर बढ़ता हूँ।” उन्होंने अपनी आँखें सिद्धता की ओर लगाए रखीं।

(२) यह रवैया अगुवे को लगातार बढ़ने और बेहतर होने के योग्य बनाता है।

(३) यह रवैया अगुवे को निराशा से नष्ट होने से बचाता है।

ग) एक स्वस्थ रवैया बनाए रखने के लिए ये रवैये एक दूसरे को संतुलित करते हैं।

(१) यदि आपके पास एक के बिना दूसरा होगा तो आपके पास एक अस्वस्थ रवैया होगा। आप या तो हार मानना चाहेंगे या फिर आप कभी यह नहीं कह पाएंगे कि आप गलत हैं या आपने कोई गलती की है।

(२) पौलुस कह सके कि वे सिद्ध नहीं थे। हालाँकि, यह बात उन्हें सिद्धता के लिए प्रयास करने से नहीं रोक पाई। उनके पास एक स्वस्थ रवैया था।

मसीही अगुवा

अपना उदाहरण लिखें:

टिप्पणियाँ -

ख. प्रतिक्रियाएं।^७

- १) किसी भी प्रकार की सेवा के लिए अपने आप को तैयार करें -- चाहे वह कार्य कितना भी छोटा क्यों न हो (लूका १६:१०)।
- २) जिस क्षेत्र में आप रह रहे हैं उसका अध्ययन करें। किताबों और पत्रिकाओं को पढ़ें (यदि वे उपलब्ध हो तो)।
- ३) अपनी प्राकृतिक प्रतिभा को विकसित करें। कैसे? उनका इस्तेमाल करें (मती २५:१४-३०)।
- ४) अच्छे कामों की आदत डालें। क्रमबद्ध तरीके से बाइबल का अध्ययन व प्रार्थना करें। अपने समय को व्यवस्थित करें। टालने का काम न करें (२ तीमुथियुस २:१५)।
- ५) आपके क्षेत्र में सफल लोगों से परामर्श, मार्गदर्शन, सलाह और आलोचना की मांग करें। सीखने में प्रयत्नशील रहें (नीतिवचन १३:१०; नीतिवचन १९:२०; नीति १:५; मती ११:२९)।
- ६) एक अच्छे व सक्रिय पासबान को आत्मसात करें। अपने आप से पूछें: किन बातों ने उन्हें इतना प्रभावशाली बनाया है? वह किस तरह से इस प्रकार की परिस्थितियों को सम्भाल लेते हैं? उनका अपने लोगों के साथ किस तरह का रिश्ता है?
- ७) एक अच्छे अगुवे से सीखें। एक चेला बनें (देखें, सीखें, कार्य करें)।
- ८) परमेश्वर के साथ समय बिताने को एक प्राथमिकता बनाएं।

मसीही अगुवा

टिप्पणियाँ -

अपना उदाहरण लिखें:

चर्चा विषय

पिछले शिक्षाओं का इस्तेमाल करते हुए चर्चा करें कि किस प्रकार अगुवे अपनी अगुवाई की योग्यता का विकसित कर सकते हैं। उदाहरणों के द्वारा बताएं कि कैसे ये सिद्धान्त प्रभावशाली ढंग से कार्य करते हैं।

V. हम किस प्रकार से अगुवाई करते हैं?

लेखक का उदाहरण:

अमेरिकन जनरल ड्विट ईसेनहोवर ने एक तार का इस्तेमाल करते हुए दिखाया कि हम किस प्रकार से दूसरों की अगुवाई की जाती है। वह मेज पर तार को रखकर कहते हैं “यदि तुम इसे खींचे तो वह आपके पीछे आएगा। यदि तुम उसे दबाओगे तो यह कहीं नहीं जाएगा।”

बिल्कुल ऐसा ही लोगों के साथ भी सत्य है। उन्हें अनुसरण करने के लिए एक उदाहरण की आवश्यकता है (यूहन्ना १०:४ और लूका २२:२५, २६ पर ध्यान दें)।

ईसेनहोवर कहते हैं, “आप लोगों के सिर पर मार मार के अगुवाई नहीं करते। यह तो प्रहार करना है, अगुवाई करना नहीं।

मसीही अगुवा

क. सेवा, नम्र, ताऔर उदाहरण के द्वारा अगुवाई करना – यूहन्ना १३:१-१७।

टिप्पणियाँ -

१. यूहन्ना १३, “कैसे” अगुवाई करनी चाहिए को लेकर हम एक बुनियादी परिभाषा का निर्माण कर सकते हैं।

क. सेवा (कार्य)।

ख. विनम्रता (स्वभाव)।

ग. उदाहरण के द्वारा (मार्ग या रूप या माध्यम)।

उदाहरण	के	विनम्रता	में	सेवा
↑		↑		↑
मार्ग		स्वभाव		क्रिया

२. सर्वप्रथम, हम “क्यों” और “कहां” पर अध्ययन करना चाहते हैं। यह, विनम्रता के साथ सेवा के उदाहरण के पीछे प्रेरणा है। किस बात ने यीशु को इस तरीके से अगुवाई करने के लिए प्रेरित किया?

क. प्रेम (यूहन्ना १३:१ का अध्ययन करें)।

१) प्रेम ने यीशु को अपने चेलों के पांव धोने के लिए प्रेरित किया।

२) जब हम परिस्थिति का स्वभाव को समझ जाते हैं तब हमें उसके प्रेम की गहराई समझ में आती है। यीशु जानते थे कि उन्हें जल्द ही मार दिया जाएगा। फिर भी, अपने चेलों की जरूरतों पर ध्यान देने के लिए वह अपनी जरूरतों को भूल गया। कुछ ही क्षणों में जब वह स्वार्थी दिखाई दे रहे थे, तब उन्होंने सर्वाधिक निःस्वार्थी कार्य को प्रदर्शित किया।

३) प्रेम एक अति शक्तिशाली ताकत है। यह अति कठिन परिस्थितियों में हमें दूसरों की सेवा करने के योग्य बनाती है। प्रेम कभी असफल नहीं होता (१ कुरिन्थियों १३:८)।

मसीही अगुवा

टिप्पणियाँ -

ख. सुरक्षा (यूहन्ना १३:१-३)।

- १) सेवा में सबसे बड़ा शत्रु असुरक्षा है। असुरक्षित लोग सेवा नहीं कर पाते हैं क्योंकि उनकी असुरक्षा उन्हें अपने ऊपर ही ध्यान केन्द्रित करने पर मजबूर करती है।
- २) दूसरों की सेवा करने हेतु आज़ाद होने के लिए, आपको सुनिश्चित होना चाहिए कि आप परमेश्वर में कौन हैं। आपको जानना चाहिए कि आप जानते हैं।
- ३) यीशु परमेश्वर पिता में अपनी सुरक्षा के कारण सेवा करने के लिए आज़ाद थे। वह जानते थे कि उन्हें पता है। वह क्या जानते थे?

क) “यीशु, ने यह जानकर कि उसके इस संसार को छोड़कर पिता के पास जाने की वह घड़ी आ पहुंची है” (यूहन्ना १३:१)।

(१) हमें यह पता होना चाहिए कि हम कहां जा रहे हैं। हमें अपने उद्धार में सुरक्षित होना चाहिए।

(२) यीशु जानते थे कि वे कहां जा रहे हैं। उनके मन में कोई संदेह नहीं था। अतः वह दूसरों की सेवा करने के लिए स्वतन्त्र थे। इस क्षेत्र में सुरक्षा का अभाव के कारण मनुष्य बस अपने ही बारे में सोचने लगता है।

ख) “यह जानकर कि पिता ने सबकुछ उसके हाथों में कर दिया है” (यूहन्ना १३:३ क)।

(१) हमें यह पता होना चाहिए कि मसीह में हमारे पास क्या है। हमें परमेश्वर के पुत्र होने के लाभ का पता होना चाहिए। हमें मसीह में अपनी पहिचान को लेकर सुरक्षित होना चाहिए।

(२) यीशु जानते थे कि उन्हें क्या दिया गया है। उन्हें किसी बात का सन्देह नहीं था। अतः, वह दूसरों की सेवा करने के लिए स्वतन्त्र थे। बिना इस सुरक्षा के आप लाभ उठाने की कोशिश करना चाहेंगे। आप केवल अपने आप पर ध्यान देने लगेंगे।

मसीही अगुवा

ग) "और [जानते हुए] कि वह परमेश्वर की ओर से आए थे, और वापस परमेश्वर के पास जा रहे थे" (यूहन्ना १३:३ ब)।

टिप्पणियाँ -

(१) हमें पता होना चाहिए कि हम परमेश्वर से कैसे संबंधित हैं। हमें परमेश्वर के साथ अपने सम्बन्ध में सुरक्षित होना चाहिए।

(२) यीशु जानते थे कि वह पिता से कैसे संबंधित हैं। इसमें कोई संदेह नहीं था। इस प्रकार, वह दूसरों की सेवा करने के लिए स्वतंत्र थे। जो लोग परमेश्वर के साथ अपने सम्बन्ध में असुरक्षित हैं, वे लोगों के साथ भी असुरक्षित हैं। वे सेवा करने में असमर्थ हैं।

४) हमारी असुरक्षाएँ हमें स्वयं पर विचार करने के लिए मजबूर करती हैं। यह दूसरों की सेवा करने की हमारी क्षमता में बाधा डालता है। सुरक्षा सेवा करने की प्रेरणा देती है। सुरक्षा हमें सेवा करने के लिए स्वतंत्र बनाती है।

लेखक का उदाहरण:

इस बिंदु को स्पष्ट करने के लिए निम्न उदाहरण का प्रयोग करें।

बस स्टॉप पर एक महिला और दो पुरुष खड़े हैं। महिला के एक हाथ में छोटा बच्चा है और दूसरे में बड़ा बटुआ है। वर्षा हो रही है।

बच्चा अचानक उनकी बाहों से बाहर कूदता है और गली की दूसरी ओर चला जाता है। महिला को अपना बटुआ नीचे रखना चाहिए और बच्चे के पीछे दौड़ना चाहिए। हालाँकि, जमीन गीली है।

वह पहले आदमी की ओर मुड़ती हैं और उन्हें उनका बटुआ सँभालने के लिए कहती हैं (यह एक बहुत ही स्त्रियोचित बटुआ है)। वह उसे रखने से इंकार कर देते हैं। वह दूसरे आदमी से उसे पकड़ने के लिए कहती हैं। वह खुशी-खुशी उसे अपनी बांह के नीचे रखते हैं और महिला के वापस आने का इंतजार करते हैं।

पहला पुरुष स्त्री की सेवा नहीं कर सका। क्यों? क्योंकि वह अपनी मर्दानगी में असुरक्षित थे। वह महिला की आवश्यकता पर ध्यान नहीं दे पा रहे थे। उनका ध्यान स्वयं पर केंद्रित था: "दूसरे मेरे विषय में क्या सोचेंगे? कोई मुझे देख सकता है - मेरा पड़ोसी, मेरा मुखिया, या सड़क के उस पार की दुकान में वह सुंदर लड़की!" इस सब के परिणामस्वरूप वह सेवा करने में असमर्थ हुए।

दूसरा पुरुष स्त्री की सेवा कर पाया। क्यों? क्योंकि वह अपनी मर्दानगी में सुरक्षित थे। वह महिला की आवश्यकता पर ध्यान केंद्रित करने में सक्षम थे। उनकी सुरक्षा ने उन्हें सेवा करने के लिए स्वतंत्र होने में सक्षम बनाया।

मसीही अगुवा

टिप्पणियाँ -

चर्चा विषय

हम अपने भीतर प्रेम और सुरक्षा की कमी को कैसे दूर कर सकते हैं, जो हमें उदाहरण के द्वारा नम्रता से सेवा करने से रोकती है?

३. अब हम अगुआई कैसे करनी है की अपनी परिभाषा के भीतर प्रतीकवाद का अध्ययन करना चाहते हैं। नम्रता में सेवा के इस उदाहरण का प्रतीकवाद क्या है?

क. पैर धोना क्रूस का प्रतीक था (अगुआई को क्रूस का प्रतीक होना चाहिए)।

१) पैर धोने का संदर्भ यह है कि यीशु वापस परमेश्वर के पास जा रहे थे। उनका समय आ गया था। वह क्रूस पर जा रहा था (यूह. १३:३)।

२) पतरस के पैर धोते समय यीशु ने कहा, "यदि मैं तुझे न धोऊँ, तो मेरे साथ तेरा कुछ भी साझा नहीं" (यूहन्ना १३:८)। हम जानते हैं कि यह क्रूस का कार्य है जो हमें धोता है।

३) पतरस के पैर धोते समय यीशु ने कहा, "जो मैं करता हूँ, तू उसे अभी नहीं जानता, परन्तु इसके बाद समझेगा" (यूहन्ना १३:७)। यह वह क्रूस थी जिसे शिष्य अभी तक नहीं समझ पाए थे।

ख. उसी प्रकार, मसीही अगुआई को क्रूस का प्रतीक होना चाहिए। अगुआई स्वयं के मरने का परिणाम होना चाहिए। हमारी सेवा और अगुआई अंदरूनी मृत्यु का बाहरी प्रकटीकरण होना चाहिए जिसे हमने अनुभव किया है।

ग. एफ.बी. मेयर ने समझ लिया कि पैर धोने की सेवा क्रूस का प्रतीक है (उदाहरण द्वारा नम्रता में सेवा का सबसे बड़ा कार्य - अर्थात्, अगुआई का सबसे बड़ा कार्य)। वह यूह. १३:४, ५ का यह संस्करण प्रस्तुत करते हैं।

"उन्होंने सिंहासन पर से उठकर, ज्योति के वस्त्रों को, जो उन्होंने अपने वेश के रूप में पहिने थे, अलग रख दिया, और मनुष्यता का कंगाल तौलिया उठाकर अपने प्रतापी व्यक्तित्व के चारों ओर लपेट लिया; क्रूस के हौद में अपना लहू डालकर, मनुष्य की भ्रष्टा और दोष के अशुद्ध दागों को धोने के लिए अपने आप को स्थापित किया।"^५

मसीही अगुवा

ख. बड़ा कैसे बनें (अगुवा कैसे बनें — यूह. १३ के सिद्धांतों को जारी रखते हुए)।

टिप्पणियाँ -

१. यीशु अपनी मृत्यु के द्वारा सबसे बड़े बने। (अध्ययन करें फिलि. २:५-११ और लूका २२:२६)।
२. नम्रता में सेवा का उदाहरण यीशु द्वारा शिष्य के प्रश्नों के उत्तर में किया गया था कि सबसे बड़ा कौन है।
 - क. ऐसा प्रतीत होता है कि चेले इस बात को लेकर बहुत चिंतित थे कि सबसे बड़ा कौन है: मत्ती २०:२५-२८; मर. ९:३३-३७; मर. १०:३५-४५; लूका ९:४६-४८; और लूका २२:२५-२७।
 - ख. अंत में, यीशु ने उनके प्रश्न का उत्तर देने का निश्चय किया। (देखें लूका २२:२५-२७ और ध्यान दें कि यह यूह. १३:१२ में पैर धोने से कैसे जुड़ा है)।
 - ग. सबसे बड़ा कौन था? यीशु ने व्यवस्थित रूप से उनके प्रश्न का उत्तर दिया;
 - १) मैं **सबसे** बड़ा हूँ (यूहन्ना १३:१३)।
 - २) मैं तुम्हारी सेवा करता हूँ (यूहन्ना १३:१४)।
 - ३) मेरी नकल करें (यूहन्ना १३:१५)।
 - ४) दास अपने स्वामी से **बड़ा** नहीं होता (पय १६)।
 - घ. सबसे बड़ा कौन है? निसंदेह, केवल यीशु ही सबसे बड़े हैं। वे उनसे बड़े नहीं थे।

↓
मैं आपकी सेवा करता हूँ।

↓
मेरी नकल करें।

मसीही अगुवा

टिप्पणियाँ -

- १) उत्तर स्पष्ट है। यीशु सबसे बड़े हैं। यीशु सबसे बड़े (अगुवे) क्यों हैं? क्योंकि वह सेवा करते हैं।
- २) शिष्य कैसे बड़े हो सकते हैं? उन्हें उनकी नकल करनी चाहिए। उन्हें सेवा करनी चाहिए। यह अगुआई या महानता का **कैसे** है।

ड. बड़प्पन को कैसे मापा जाता है? क्या इसे सेंटीमीटर या पाउंड या लीटर में मापा जाता है? नहीं! इसे नम्रता और सेवा में मापा जाता है। यीशु ने बड़प्पन को मापने के लिए एक मापक बनाया। माप की इकाइयाँ नम्रता और सेवा में हैं।

बड़प्पन मापने का मापक!!

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19
---	---	---	---	---	---	---	---	---	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----

माप की इकाइयाँ = सेवा और नम्रता

चर्चा विषय

इस पर चर्चा करने के लिए पिछली अवधारणाओं का उपयोग करें कि हमारी अगुआई के बड़प्पन को मापने के लिए सेवा और नम्रता का उपयोग कैसे किया जाता है। एक अगुवे के रूप में अपनी सच्ची सफलता के संबंध में हमें क्या निर्धारित करना चाहिए, यदि हमारी सेवा और नम्रता का माप कम है?

च. बड़प्पन एक सम्बंधित अवधारणा है।

- १) दुर्भाग्य से, हम (शिष्यों समान) इसे अन्य लोगों के संदर्भ में सम्बंधित बनाने के लिए प्रवृत्त होते हैं।
- २) हम अपनी तुलना दूसरों से करते हैं। शिष्य यही कर रहे थे।
- ३) हालाँकि, यीशु ने दूसरों की तुलना को स्वयं की तुलना के साथ बदल दिया। यीशु चेलों को चुनौती देते हैं कि वे केवल उनकी ओर देखें। जब हम इसे अपने जीवन में लागू करते हैं:
 - क) हम प्रतिस्पर्धा के बंधन से मुक्त हो जाते हैं।
 - ख) हमारे सामने एक बड़ी चुनौती रखी जाती है। उसका परिणाम नम्रता है।

मसीही अगुवा

चर्चा विषय

टिप्पणियाँ -

निम्नलिखित आरेख का अध्ययन और चर्चा करें।

बड़प्पन सम्बंधित है		बड़प्पन सम्बंधित है	
हम इसे दूसरों से सम्बंधित करने का प्रयास करते हैं		यीशु इसे स्वयं से सम्बंधित बनाते हैं	
हम प्रतियोगिता के बंधन में रहते हैं। हमेशा ऐसे लोग होते हैं जो कुछ चीजों में हमसे बेहतर होते हैं। हम सरलता से निराश हो सकते हैं।	हम घमंड के बंधन में रहते हैं। हमेशा ऐसे लोग होते हैं जो कुछ चीजों में हमसे भी बदतर हैं। हम सरलता से अहंकारी बन सकते हैं।	प्रतियोगिता के बंधन से मुक्त। हम यीशु के साथ प्रतियोगिता नहीं कर सकते! हम निराश नहीं हैं। हम स्वतंत्र हैं!	हम बड़ी चुनौती की भावना के साथ जीते हैं। हम यीशु से बेहतर नहीं हो सकते! हम अभिमानी नहीं हैं, हम विनम्र हैं!
हम ऐसा नहीं कह हैं: पर मैं दौड़ा चला जाता हूँ। फिलि. ३:१२	हम ऐसा नहीं कह हैं: यह मतलब नहीं कि मैं पा चुका हूँ। फिलि ३:१२	हम कह सकते हैं: पर मैं दौड़ा चला जाता हूँ। फिलि. ३:१२	हम कह सकते हैं: यह मतलब नहीं कि मैं पा चुका हूँ। फिल ३:१२

ग. चलों में बड़प्पन (अगुआई) की एक शारीरिक धारणा थी।

१. उन्होंने बड़प्पन को अधिकार के संदर्भ में परिभाषित किया।

२. उन्होंने बड़प्पन को एक दूसरे से सम्बंधित किया।

३. यीशु ने उस धारणा को एक स्वर्गीय धारणा से बदल दिया।

क. उन्होंने बड़प्पन को सेवा के संदर्भ में परिभाषित किया।

ख. उन्होंने बड़प्पन को अपने से सम्बंधित किया।

४. जुडसन कॉर्नवाल ने कहा, “परमेश्वर को हमारे बड़प्पन में कोई रुचि नहीं है। वह केवल हमारी उपयोगिता में रुचि रखते हैं। हाँ, सबसे बड़ा सेवक है। परन्तु फिर भी सेवक बड़ा नहीं बनता, वह केवल बड़प्पन उपलब्ध कराते हैं।”^६

मसीही अगुवा

टिप्पणियाँ -

५. सबसे बड़ा कौन है? यीशु! (यूह. १३:१३)।

क. वह सबसे बड़े कैसे है? वह कैसे अगुआई करते हैं? उदाहरण के द्वारा नम्रता में सेवा (यूह. १३:१४, १५अ)।

ख. हम बड़े कैसे बन सकते हैं? हम कैसे अगुआई कर सकते हैं? यीशु की नकल करने के द्वारा (यूह. १३:१५ब)।

ग. हम यीशु की नकल कैसे कर सकते हैं? दास अपने स्वामी से बड़ा नहीं होता (यूह. १३:१६)।

१) ध्यान दें कि इस अवधारणा को यूह. १३:२० में कैसे समझाया गया है। यह यीशु के हम में होने के संदर्भ में समझाया गया है। यह मसीह की नकल की बाइबल आधारित समझ पर स्थिर है।

२) यीशु ने जो किया है हम उसे दोहरा नहीं सकते। इस मायने में हम यीशु की नकल नहीं कर सकते।

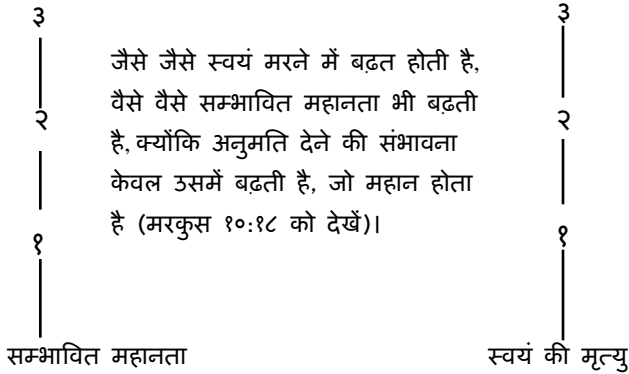
३) बाइबल आधारित नकल का संबंध मसीह को हम में रहने की अनुमति देने से है (नकल पर अधिक जानकारी के लिए, MOTMOT (मोटमोट) पाठ्यक्रम परमेश्वर को जानना II देखें)। इस प्रकार, यीशु की नकल करने का एकमात्र बाइबल आधारित तरीका, दूसरों की अगुवाई करने का एकमात्र बाइबल आधारित तरीका – बड़े होने के लिए एकमात्र बाइबल आधारित तरीका है कि आप अपने भीतर रहने के लिए **उस एक को जो बड़ा है**, अनुमति दें (गला. २:२०)।

चर्चा विषय

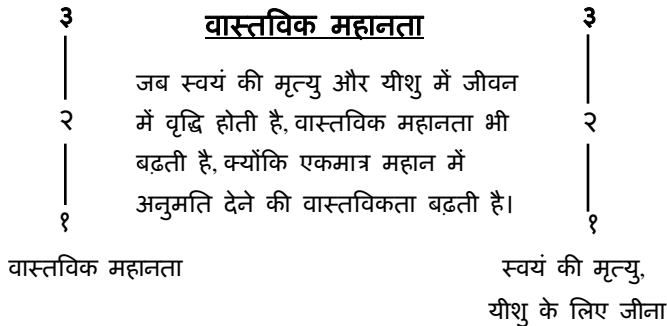
यहाँ हमें संभावित और वास्तविक बड़प्पन के बीच अंतर करने में सावधान रहना चाहिए। निम्नलिखित आरेख का अध्ययन और चर्चा करें। पूर्वी रहस्यवाद और सच्ची मसीहियत के बीच अंतर पर चर्चा करें।

मसीही अगुवा

सम्भावित महानता



वास्तविक महानता



संभावित महानता और वास्तविक महानता में अन्तर केवल इतना है कि एक समर्पित पूर्वी रहस्यवादी दूसरा एक समर्पित मसीही।

अपने आपको खोजने के लिए एक समर्पित पूर्वी रहस्यवादी स्वयं के लिए मर जाता है। मरता है ताकि वह यीशु के लिए जी सके।

टिप्पणियाँ -

घ. सारांश

- हम किस प्रकार से अगुवाई करते हैं? हम उदाहरण के द्वारा विनम्रता में सेवा करते हैं।
- हम प्रेम और परमेश्वर में सुरक्षा के द्वारा प्रेरित होते हैं।
- हमारी अगुवाई क्रूस की प्रतीक होना चाहिए।
- अगुवा (या प्रधान) सेवक होता है।
- महानता सेवा और नम्रता के द्वारा नापी जाती है।
- महानता यीशु से जुड़ी हुई है। यह किसी और से जुड़ी हुई नहीं है।
- यीशु सबसे महान है। यदि हम महान होना चाहते हैं तो हमें उन्हें हम में होकर महान बनने की अनुमति देनी होगी। यदि हम अगुवाई करना चाहते हैं तो हमें उन्हें हम में होकर अगुवाई करने की अनुमति देनी चाहिए।
- अन्त में, इन बातों से जोड़कर यीशु के निष्कर्ष को याद रखें: "तुम इन बातों को जानते हो और यदि इन बातों पर चलो, तो तुम धन्य हो (यूहन्ना १३:१७)।

मसीही अगुवा

टिप्पणियाँ -

ड. परिशिष्ट: अच्छे अगुवे के १२ भेद।^८

१. अपने क्षेत्र के विकास के बारे में जानकारी रखें (किताबें व पत्रिकाएं पढ़ें, अन्य अगुवों से बातचीत करें)।
२. सर्वदा समस्या के दोनों पहलुओं को सुनें। केवल एक व्यक्ति की बातों को सुनकर ही कोई कदम न उठाएं।
३. कभी आत्मविश्वास न छोड़ें। यदि कोई जन आप से किसी बात को गुप्त रखने के लिए कहता है तो उसकी इस बात को गुप्त ही रखें। यदि लोग आप पर भरोसा नहीं कर सकते तब आपकी सेवकाई अप्रभावशाली होगी।
४. एक अच्छी छोड़ने वाले बनें।
५. लोगों के बीच गलतफहमियों का दूर करने वाले बनें। मेल मिलाप करवाएं (मती ५:९)।
६. अपने गुस्से पर लगाम लगाएं।
७. अपने बारे में अधिक गम्भीरता के साथ न सोचें, नहीं तो आप जरूर फूल जाएंगे। एक गुब्बारे के समान, कुछ लोग आपको उछालना पसन्द करेंगे। अपने आप पर हंसने में सक्षम बनें।
८. अपनी समस्याओं से भागने का प्रयास न करें (अर्थात् असफलताओं, आपत्तियों, शिकायतों, आलोचनाओं से)। याद रखें कि समस्याएं गायब नहीं होती। समस्याओं का सुलझाया जाता है।
९. अपने फायदे के लिए कोई निर्णय न लें।
१०. जो लोग आपके अधीन हैं उन्हें भी उतना ही आदर दें जितना आप अपने अधिकारियों को देते हैं।
११. सफलता के समान असफलता की भी जिम्मेदारी लें।
१२. जिन लोगों की आप अगुवाई कर रहे हैं उनमें बढ़ोतरी के लिए अवसरों को खोजें और रचें।

मसीही अगुवा

मसीही अगुवा: अंतिम टिप्पणियाँ

टिप्पणियाँ -

^१ लेरोय एम्स बी द लीडर यू वांट टू बी (विटन: विक्टर बुक्स १८७५), पृष्ठ ३० चित्र “६-८-१०” सिद्धांत पर आधारित है। अनुमति द्वारा इस्तेमाल किया गया है।

^२ आइबिड।, पृष्ठ ३२।

^३ जॉन हगाई, लीड ऑन (वाको: वर्ड बुक १९८६), पृष्ठ ७१।

^४ जडसन कोर्नवाल, प्रोफाइल्स ऑफ द लीडर्स (प्लेन फील्ड: लोगोस इंटरनेशनल, १९८०) पृष्ठ २२०।

^५ एफ.बी. मेयर, लव टू द अटर मोस्ट (एन वाई: फ्लेमिंग एच. रेवेल सीओ १९८८) पृष्ठ १८।

^६ कोर्नवाल, पृष्ठ २१०।

^७ कक्षा के नोट्स से लिया गया, प्रिंसिपल ऑफ लीडरशिप, डॉ. डैन हेगेस, रीजेन्ट विश्वविध्यालय, १९८७।

^८ आइबिड।

मसीही अगुवा

टिप्पणियाँ -